NEXT IAS

विश्व इतिहास

सिविल सेवा परीक्षा 2027

MADE EASY PUBLICATIONS
द्वारा प्रकाशित

MADE EASY Publications Pvt. Ltd.
कॉर्पोरेट कार्यालय: 44-A/4, कालू सराय
(हौज़ ख़ास मेट्रो स्टेशन के निकट), नई दिल्ली-110016
संपर्क सूत्र: 011-45124660, 8860378007
ई-मेल करें: infomep@madeeasy.in
विजिट करें: www.madeeasypublications.org

विश्व इतिहास

© **कॉपीराइट: Made Easy Publications Pvt. Ltd.**

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, पुनर्मुद्रण, प्रस्तुतीकरण और किसी ऐसे यंत्र में संग्रहण नहीं किया जा सकता, जिससे इसकी पुनर्प्राप्ति की जा सकती हो अथवा इसका स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार) से उपर्युक्त उल्लिखित प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण: 2024
द्वितीय संस्करण: 2025
तृतीय संस्करण: 2026

विषयसूची

विश्व इतिहास

इकाई–I: विश्व को आकार देने वाली क्रांतियाँ

अध्याय 1

आधुनिक युग का आरंभ (Beginning of Modern Age) 2
1.1 परिचय (Introduction) 2
1.2 सामंतवाद (Feudalism) 2
1.3 चर्च की भूमिका (Role of Church) 4
पोप (Pope) 5
चर्च प्रणाली (Church System) 5
धार्मिक आदेश (Religious Orders) 5
तीर्थयात्रा (Pilgrimages) 5
मठ (Monasteries) 5
मतभेद (Dissent) 5
शिक्षा (Education) 6
अर्थव्यवस्था (Economy) 6
समाज (Society) 6
धर्म (Religion) 6
1.4 पुनर्जागरण (Renaissance) 6
पुनर्जागरण के कारण (Causes of Renaissance) 7
पुनर्जागरण की अभिव्यक्तियाँ (Expressions of Renaissance) 8
1.5 धर्मसुधार [Reformation (16th Century)] 11
कैथोलिक चर्च की बुराइयाँ (Evils of Catholic Church) 11
प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार (Protestant Reformation) 12
मार्टिन लूथर (Martin Luther) 12
कैथोलिक पुनरुद्धार (Catholic Counter Reformation) 12
1.6 नई भूमि का अन्वेषण और खोज (Exploration and Discovery of New Lands) 13
अमेरिका 13
भारत 13
1.7 व्यापार और व्यापारिक नगरों का उद्भव (Emergence of Trade and Trading Towns) 14
नगरों के उदय के कारक (Factors for the Rise of Towns) 14
1.8 राष्ट्र राष्ट्रों का उदय (Rise of Nation States) 14
परिचय (Introduction) 14
अंग्रेज़ी क्रांति (English Revolution) 15

अध्याय 2

अमेरिकी क्रांति (1775–83) (American Revolution (1775-83)) 17
2.1 संक्षिप्त विवरण (Overview) 17
2.2 अमेरिकी क्रांति (American Revolution) 17
भूमिका (Prelude) 18
अंग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह के कारण (Causes of Revolt Against British) 19
प्रबुद्ध विचारकों की भूमिका (Role of Enlightenment Thinkers) 21
प्रमुख घटनाएँ (Major Events) 22
2.3 अमेरिकी गृहयुद्ध (American Civil War), 1861-65 27
2.4 अमेरिकी क्रांति के परिणाम (Consequences of American Revolution) 28
राजनीतिक परिवर्तन (Political Changes) 28
भू-राजनीतिक परिवर्तन (Geopolitical Changes) 28
2.5 अमेरिकी क्रांति का महत्त्व (Significance of American Revolution) 28

अध्याय 3

औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution) 31
3.1 परिचय (Introduction) 31
3.2 परिवर्तन जिनके कारण औद्योगिक क्रांति हुई (Changes that Led to Industrial Revolution) 31
3.3 संबंधित क्रांतियाँ (Associated Revolutions) 32
कृषि क्रांति (Agriculture Revolution) 32
जनसांख्यिकीय क्रांति (Demographic Revolution) 32
नवाचार और औद्योगीकरण (Innovation and Industrialization) 32
परिवहन और औद्योगिक क्रांति (Transportation and Industrial Revolution) 33
3.4 औद्योगीकरण के दौरान जीवन की गुणवत्ता (Quality of Life during Industrialization) 34
3.5 इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution in England) 34
इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के कारण (Reasons for Industrial Revolution in England) 34
औद्योगिक क्रांति का प्रसार (Spread of Industrial Revolution) 35

3.6 अन्य देशों में औद्योगीकरण (Industrialization in Other Countries) 36
संयुक्त राज्य अमेरिका (United States of America) 36
जर्मनी (Germany) 36
रूस (Russia) 37
जापान (Japan) 37
चीन (China) 37

3.7 औद्योगिक क्रांति के प्रभाव (Effects of Industrial Revolution) 38
आर्थिक प्रभाव (Economic Effects) 38
सामाजिक प्रभाव (Social Effects) 38
राजनीतिक प्रभाव (Political Effects) 39
वैचारिक प्रभाव (Ideological Effects) 40

3.8 औद्योगिक क्रांति: एक आलोचनात्मक विश्लेषण (Industrial Revolution: A Critical Analysis) 40
लाभ (Merits) 40
हानियाँ (Demerits) 41
निष्कर्ष (Conclusion) 41

अध्याय 4

फ्राँसीसी क्रांति (1789) (French Revolution (1789)) 43

4.1 परिचय (Introduction) 43

4.2 कारण (Causes) 43
सामाजिक कारण (Social Causes) 43
राजनीतिक (Political) 43
आर्थिक कारण (Economic Causes) 44

4.3 प्रबुद्ध विचारकों की भूमिका (Role of Enlightenment Thinkers) 44
जॉन लॉक (John Locke) 44
मॉन्टेस्क्यू (Montesquieu) 44
जीन जैक्स रूसो (Jean Jacques Rousseau) 45

4.4 क्रांति का प्रादुर्भाव (Outbreak of Revolution) 45
एस्टेट जनरल की बैठक (Meeting of the Estates General) 45
टेनिस कोर्ट शपथ (Tennis Court Oath) 45
बास्तील का पतन (Fall of Bastille) 46
राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा (National Assembly) 46
पुरुष और नागरिक के अधिकारों की घोषणा (Declaration of Rights of Man and Citizen) 47
विश्लेषण (Analysis) 47

4.5 फ्राँसीसी क्रांतिकारी युद्ध (French Revolutionary Wars) (1792 – 1802) 47

4.6 जैकोबियन और आतंक का शासन (Jacobins and Reign of Terror) 48

4.7 नेपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) 49
उदय (Rise) 49
नेपोलियन संहिता (Napoleonic Code) 50
सामाजिक-राजनीतिक सुधार (Socio-Political Reforms) 50
शिक्षा में सुधार (Reforms in Education) 51
कला और साहित्य में सुधार (Reforms in Art and Literature) 51
वित्तीय सुधार (Financial Reforms) 51
धार्मिक सुधार (Religious Reforms) 51
महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental System) 51
विश्लेषण (Analysis) 52
परिणाम (Aftermath) 52
नेपोलियन के युद्ध (Napoleonic Wars) 52
नेपोलियन का काल: एक आलोचनात्मक विश्लेषण (Napoleonic Era: A Critical Analysis) 53

4.8 फ्रांसीसी क्रांति का महत्त्व और प्रभाव (Significance and Impact of the French Revolution) 54
फ्राँस पर प्रभाव (Impact on France) 54
ब्रिटेन पर प्रभाव (Effect on Britain) 55
यूरोप पर प्रभाव (Effect on Europe) 56
स्थायी प्रभाव (Permanent Effects) 56

4.9 अमेरिकी और फ्राँसीसी क्रांति की तुलना (American and French Revolution: A Comparison) 56

अध्याय 5

यूरोप में क्रांतिकारी आंदोलन (Revolutionary Movements in Europe) 60

5.1 वियना कांग्रेस (Vienna Congress) 60
शक्ति संतुलन का सिद्धांत (Principle of Balance of Powers) 60
वैध शासन की पुनर्स्थापना का सिद्धांत (Principle of Restoration of Legitimate Rule) 61
विजेताओं को क्षतिपूर्ति देने का सिद्धांत (Principle of Compensation to the Victors) 61
वियना कांग्रेस: एक आलोचनात्मक विश्लेषण (Vienna Congress : A Critical Analysis) 61
वियना कांग्रेस के निर्णयों में दोष (Defects of Settlement by Vienna Congress) 62

5.2 नए युग का आरंभ (Beginning of New Age) 64

5.3 पवित्र संघ (Holy Alliance) 64

5.4 यूरोपीय व्यवस्था (Concert of Europe) 65
ऐक्स-ला-चैपल कांग्रेस: 1818 (Congress of Aix-la-Chapelle : 1818) 65

ट्रोपो कांग्रेस: 1820 (Congress of Troppau : 1820) 66
लाईबाख कांग्रेस : 1821 (Laibach Congress : 1821) 66
वेरोना कांग्रेस : 1822 (Verona Congress : 1822) 66
असफलता के कारण (Causes of Failure) 67
5.5 1830 की क्रांतियाँ (Revolutions of 1830) 68
फ्राँस पर प्रभाव (Impact on France) 68
यूरोप के अन्य हिस्सों पर प्रभाव (Impact on Other Parts of Europe) 69
5.6 1848 की क्रांतियाँ (Revolutions of 1848) 69
फ्राँस पर प्रभाव (Impact on France) 70
यूरोप के अन्य भागों पर प्रभाव (Impact on Other Parts of Europe) 71
1830 और 1848 की क्रांति: एक तुलना (Revolution of 1830 and 1848: A Comparison)...71
5.7 इटली का एकीकरण (Unification of Italy) 72
इटली के एकीकरण में बाधाएँ (Hurdles against the Unification of Italy) 72
इटली के एकीकरण को बढ़ावा देने वाले कारक (Factors Promoting Italian Unification) 73
एकीकरण की प्रक्रिया (Process of Unification)............74
5.8 जर्मनी का एकीकरण (Unification of Germany) 74
जर्मनी के एकीकरण के कारण (Causes of German Unification) 75
एकीकरण की प्रक्रिया (Process of Unification)............76
इटली और जर्मनी का एकीकरण: एक तुलना (Unification of Italy and Germany: A Comparison)............77

अध्याय 6

रूसी क्रांति (Russian Revolution) 79
6.1 परिचय (Introduction) 79
6.2 प्रारंभिक समाज (Early Society) 79
6.3 1905 की रूसी क्रांति (Russian Revolution of 1905) ...79
अक्टूबर घोषणा-पत्र, 1905 (October Manifesto, 1905) 81
ज़ार द्वारा शुरू किए गए सुधार (Reforms Initiated by Czar) 81
6.4 1917 की क्रांति के अग्रदूत (Precursors to 1917 Revolution) 82
शासन के समर्थन में कमी (Declining Support for Regime) 82
प्रथम विश्वयुद्ध की भूमिका (Role of World War-I).....83
6.5 1917 की क्रांतियाँ: फरवरी और अक्टूबर (1917 Revolutions: February and October) 84
1917 की फरवरी क्रांति के कारण (Reasons for February Revolution of 1917) 84
अक्टूबर क्रांति, 1917 (October Revolution 1917) 84
6.6 रूसी क्रांति का महत्त्व (Significance of Russian Revolution) 85
परिणाम (Consequences) 86
प्रभाव (Impact) 86
6.7 क्रांतियों की तुलना (Comparing the Revolutions) 88
6.8 निष्कर्ष (Conclusion) 89

इकाई–II: विश्व की प्रमुख विचारधाराएँ

अध्याय 7

विभिन्न सामाजिक-आर्थिक प्रणालियाँ (Different Socio-Economic Systems) 92
7.1 परिचय (Introduction) 92
7.2 पूँजीवाद (Capitalism) 92
7.3 साम्यवाद (Communism) 93
7.4 समाजवाद (Socialism) 93
समाजवाद की विशेषताएँ (Features of Socialism)......94
समाजवाद के विभिन्न प्रकार (Different Types of Socialism) 94
एक राजनीतिक-आर्थिक प्रणाली के रूप में समाजवाद का विकास (Evolution of Socialism as a Politico-Economic System) 96
आरंभिक समाजवादी (Early Socialists) 98
रूस में समाजवाद (Socialism in Russia) 101
स्टालिन द्वारा उठाए गए कदम (Steps Taken by Stalin) 103
वि-स्टालिनीकरण की महत्त्वपूर्ण नीतियाँ (Important Policies of De-Stalinization)............105
7.5 चीन में साम्यवाद (Communism in China) 110
चीन में साम्यवादी समर्थन के कारण (Reasons for Communist Support in China) 110
1949 में चीन की समस्याएँ (Problems of China in 1949) 111
100 फूल अभियान, 1957 (100 Flowers Campaign, 1957) 111
ग्रेट लीप फॉरवर्ड, 1958 (Great Leap Forward, 1958) 111
सांस्कृतिक क्रांति, 1966-69 (Cultural Revolution, 1966-69) 112
1976 के बाद चीन में साम्यवाद (Communism in China After 1976) 113
चीन में साम्यवाद के अस्तित्व के कारण (Reasons for Survival of Communism in China) 113
7.6 यूरोप के बाहर साम्यवाद (Communism Outside Europe) 114
कोरियाई युद्ध (Korean War) 114
वियतनाम युद्ध (Vietnamese War) 117

क्यूबा की क्रांति (Cuban Revolution)....................119
साल्वाडोर आलेंदे के अधीन चिली, 1970-73 (Chile Under Salvador Allende, 1970-73).........122
7.7 यूएसए द्वारा किए गए अन्य हस्तक्षेप (Other Interventions by USA)...............................123
राष्ट्रों की राजव्यवस्था में हस्तक्षेप के कारण (Reasons for Interference in Polity of Nations) .123
दक्षिण-पूर्व एशिया (South-East Asia)....................123
मध्य-पूर्व (Middle East).......................................127

अध्याय 8

फ़ासीवाद और नाज़ीवाद (Fascism and Nazism).............129
8.1 परिचय (Introduction)..129
8.2 फ़ासीवाद की परिभाषा (Definition of Fascism)...........129
मुसोलिनी का फासीवादी सिद्धांत (Mussolini's Fascist Doctrine)...........................129
8.3 फ़ासीवाद का विकास: कारण (Growth of Fascism: Reasons).............................130
राजनीतिक कारण (Political Reason)......................130
आर्थिक कारण (Economic Reasons)...................132
सामाजिक कारण (Social Reasons).......................132
8.4 फ़ासीवाद: एक आलोचनात्मक विश्लेषण (Fascism: A Critical Analysis) 132
सकारात्मक (Positives) 132
नकारात्मक (Negatives).......................................133
फ़ासीवाद द्वारा इटली को पहुँचाया गया लाभ (Benefits Fascism Brought to Italy)..................133
8.5 मुसोलिनी को अपदस्थ करने के कारण (Reasons for Overthrow of Mussolini) 134
8.6 वाइमर गणराज्य (Weimar Republic).........................134
वाइमर गणराज्य और हिटलर (Weimar Republic and Hitler) 134
वाइमर विरोधी भावना (Anti-Weimar Feeling)..........134
वाइमर गणराज्य की विफलता के कारण (Reasons for Failure of Weimar Republic)........135
राष्ट्रीय समाजवाद (National Socialism).................137
हिटलर की शक्ति का सुदृढ़ीकरण (Consolidation of Hitler's Power) 137
इनेबलिंग एक्ट, 1933 [Enabling Law (1933)] 138
नाज़ीवाद की विशेषताएँ (Features of Nazism) 138
8.7 जापान में फ़ासीवाद (Fascism in Japan)..................140
पृष्ठभूमि (Background).......................................140
जापान में तानाशाही बढ़ने के कारण (Reasons for Growth of Dictatorship in Japan)......................140
8.8 स्पेन (Spain) 141
पृष्ठभूमि (Background).......................................141
स्पेन में गृहयुद्ध के कारण (Reasons for Spanish Civil War) 142
गृहयुद्ध, 1939 [Civil War (1939)] 142
राष्ट्रवादी विजय के कारण (Reasons for Nationalist Victory) 143
स्पेन में फ़ासीवाद (Fascism in Spain) 143
स्पेन में फ़ासीवाद की विशेषताएँ (Features of Fascism in Spain)........................143
8.9 नाजीवाद, फ़ासीवाद और साम्यवाद: तुलना (Nazism, Fascism and Communism: A Comparison)...........144
नाज़ीवाद और फ़ासीवाद के बीच समानताएँ (Similarities between Nazism and Fascism).....144
नाज़ीवाद और फ़ासीवाद के बीच अंतर (Differences between Nazism and Fascism)....144
साम्यवाद और फ़ासीवाद के बीच समानताएँ (Similarities between Communism and Fascism)..145

अध्याय 9

साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद (Imperialism and Colonialism)....................................... 148
9.1 परिभाषा (Definition) 148
9.2 साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का इतिहास (History: Imperialism and Colonialism) 148
9.3 औपनिवेशीकरण: कारण (Colonisation: Reasons) 150
9.4 नव-साम्राज्यवाद (Neo-Imperialism) 150
9.5 अफ़्रीका में संघर्ष (Scramble in Africa)...................151
फ़्राँस (France)..153
ब्रिटेन (Britain) 154
जर्मनी (Germany) 154
इटली (Italy)...154
अफ़्रीका का विभाजन (Partition of Africa)...............154
9.6 प्रशांत क्षेत्र में उपनिवेशवाद (Colonialism in Pacific)....156
ऑस्ट्रेलिया (Australia)...156
न्यूज़ीलैंड (New Zealand)....................................156
प्रशांत द्वीप (Pacific Islands)................................156
9.7 एशिया में उपनिवेशवाद (Colonialism in Asia)............156
ग्रेट ब्रिटेन (Great Britain)....................................156
फ़्राँस (France)..157
नीदरलैंड्स (Netherlands)....................................158
पुर्तगाल (Portugal)...158
चीन में उपनिवेशवाद (Colonialism in China) 159
अफीम युद्ध (Opium Wars) 159
9.8 नव-साम्राज्यवाद का प्रभाव एवं मूल्यांकन (Impact and Evaluation of New Imperialism).........163
9.9 साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष (Struggle against Imperialism)............................164
9.10 नव-उपनिवेशवाद (Neo-colonialism) 164

अध्याय 10

संयुक्त राज्य अमेरिका: साम्राज्यवादी शक्ति
(USA: An Imperial Power)....166
10.1 परिचय (Introduction)....166
10.2 स्पेन-अमेरिका युद्ध (Spanish-American War)....166
10.3 हवाई (Hawaii)....168
10.4 सैंडविच द्वीपसमूह (Sandwich Islands)....168
10.5 समोआ द्वीपसमूह (Samoa Islands)....168

अध्याय 11

जापान: एक साम्राज्यवादी शक्ति
(Japan: An Imperial Power)....171
11.1 परिचय (Introduction)....171
11.2 मेइजी पुनर्स्थापना (Meiji Restoration)....171
11.3 नया संविधान (New Constitution)....171
11.4 जापानियों का बढ़ता प्रभाव (Increasing Japanese Clout)....172

अध्याय 12

राष्ट्रवादी आंदोलनों का उदय
(Rise of National Movements)....174
12.1 परिचय (Introduction)....174
12.2 एशिया (Asia)....174
भारत (India)....174
चीन (China)....174
फ़िलीपींस (Philippines)....176
हिंद-चीन (Indo-China)....176
इंडोनेशिया (Indonesia)....178
12.3 अफ़्रीका (Africa)....178
लीबिया (Libya)....178
गोल्ड कोस्ट (घाना) [Gold Coast (Ghana)]....179
अल्जीरिया (Algeria)....179
केन्या (Kenya)....180
12.4 लैटिन अमेरिका (Latin America)....180

इकाई - III: विश्वयुद्ध

अध्याय 13

प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व प्रमुख घटनाक्रम
(Major Events Before World War I)....183
13.1 परिचय (Introduction)....183
13.2 अंतर-साम्राज्यिक प्रतिद्वंद्विता (Inter-Imperial Rivalries)....183
13.3 जर्मनी द्वारा एल्सेस-लॉरेन का अधिग्रहण (Annexation of Alsace-Lorraine by Germany)....183
13.4 सर्बियाई राष्ट्रवाद (Serbian Nationalism)....184
13.5 मोरक्को संकट (Moroccan Crisis)....185
13.6 बोस्निया संकट (Bosnia Crisis)....185
13.7 अगाडिर संकट, 1911 (Agadir Crisis, 1911)....186
13.8 बाल्कन युद्ध (Balkan Wars)....186
13.9 ऑस्ट्रिया के राजकुमार फ्रैंज़ फर्डिनेंड की हत्या (Assassination of Archduke Franz Ferdinand)....187
13.10 गठबंधनों का निर्माण (Formation of Alliances)....187
तीन सम्राटों की लीग (1872) (League of Three Emperors)....188
दोहरा गठबंधन (1879) (Dual Alliance)....188
त्रिपक्षीय संधि (1882) - जर्मनी, ऑस्ट्रिया और इटली (Triple Alliance – Germany, Austria, and Italy)....188
तीन सम्राटों का गठबंधन (1881) (Three Emperors' Alliance)....189
पुनराश्वासन संधि (1887) (Reinsurance Treaty)....189
त्रिपक्षीय सौहार्द- रूस, फ्राँस, ग्रेट ब्रिटेन (Triple Entente–Russia, France, Gresat Britain)....189

अध्याय 14

प्रथम विश्वयुद्ध (World War I)....191
14.1 1914 में यूरोप की स्थिति (Europe in 1914)....191
14.2 प्रथम विश्वयुद्ध के कारण (Causes of World War I)....191
गठबंधन प्रणाली (Alliance System)....191
औपनिवेशिक प्रतिद्वंद्विता (Colonial Rivalry)....192
नौसेना प्रतिद्वंद्विता (Naval Race)....192
आर्थिक प्रतिद्वंद्विता (Economic Rivalry)....192
बाल्कन की स्थिति (Situation in Balkan)....192
ऑस्ट्रिया के लिए जर्मनी का समर्थन (German Backing for Austria)....193
प्रेस की भूमिका (Role of Press)....193
14.3 युद्ध के कारण: एक आलोचनात्मक विश्लेषण (Causes of War: A Critical Analysis)....193
14.4 युद्ध आरंभ करने वाली घटनाएँ (Events Leading to Outbreak of the War)....193
मोरक्को संकट (Moroccan Crisis), (1905-06)....193
रूस के साथ ब्रिटिश समझौता (British Agreement with Russia)....194
बोस्निया संकट (Bosnia Crisis)....194
अगाडिर संकट (Agadir Crisis), 1911....194
प्रथम बाल्कन युद्ध [First Balkan War (1912)]....194
द्वितीय बाल्कन युद्ध [Second Balkan War (1912)]....195
आर्कड्यूक फ्रैंज़ फर्डिनेंड की हत्या (Assassination of Archduke Franz Ferdinand), 1914....195

14.5 प्रथम विश्वयुद्ध की अनिवार्यता (Inevitability of World War I)................................196
14.6 युद्ध की शुरुआत (Beginning of the War)................196
14.7 युद्ध का लंबा खिंचना (Protraction of the War)..........197
14.8 केंद्रीय शक्तियों की क्षति के कारण (Reasons for Loss of Central Powers)..................197
14.9 सर्वांगिक युद्ध (Total War).....................................197
14.10 युद्ध के प्रभाव (Impacts of War)............................199
राजनीतिक प्रभाव (Political Impact).......................199
आर्थिक प्रभाव (Economic Impact).......................199
सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव (Socio-Cultural Impact) 200
14.11 शांति समझौता (Peace Settlement) 200
वर्साय की संधि (Treaty of Versailles)..................200
युद्ध के उद्देश्य (War Aims)...................................201
वुडरो विल्सन के चौदह सूत्र (Fourteen Points of Woodrow Wilson)...............201
विभिन्न शांति व्यवस्थाएँ (Different Peace Settlements)..........................202
संधि का कार्यान्वयन (Implementation of the Treaty) 203
14.12 वर्साय की संधि का प्रभाव (Impact of Treaty of Versailles) 204
भौतिक प्रभाव (Physical Impact) 204
वित्तीय प्रभाव (Financial Impact)..........................204
राजनीतिक प्रभाव (Political Impact).......................204
अन्य प्रभाव (Other Impact).................................205
14.13 अन्य संधियाँ (Other Treaties) 205
संट-जर्मन-एन-ले की संधि (Treaty of Saint-Germain-en-Laye)..................205
त्रियानो की संधि (Treaty of Trianon) 206
न्यूली की संधि (Treaty of Neuilly) 206
सेवर्स की संधि (Treaty of Sevres)........................206
लुसाने की संधि (Treaty of Lausanne) 207

अध्याय 15

राष्ट्र संघ (League of Nations) 209
15.1 परिचय (Introduction)...209
15.2 राष्ट्र संघ के गठन के कारण (Reasons for Formation)....................................209
15.3 राष्ट्र संघ के उद्देश्य (Objectives of League of Nations)........................210
15.4 राष्ट्र संघ की सफलताएँ (Successes of League of Nations) 210
15.5 राष्ट्र संघ की विफलताएँ (Failures of League of Nations)............................210
फ्यूम पर अधिकार (Capture of Fiume) (1919).......211
विल्ना पर नियंत्रण (Capture of Vilna) (1920) 211
मंचूरिया का संकट (Manchurian Crisis) (1931) 211
एबीसिनिया का संकट (Abyssinian Crisis) (1935)..211
स्पेन का गृहयुद्ध (Spanish Civil War) (1936-39) ..211
15.6 राष्ट्र संघ की विफलता के कारण (Reasons for Failure of League of Nations)...........212
राष्ट्र संघ में शामिल होने में अमेरिका की अनिच्छा (US's Reluctance in Joining League) 212
संचालन के लिए महाशक्तियों पर निर्भरता (Dependence on Great Powers for Manoeuvrability)...212
संरचनात्मक अवरोध (Structural Conundrum).........212
तुष्टीकरण की नीति (Policy of Appeasement) 212
सोवियत संघ का राष्ट्र संघ का सदस्य न होना (USSR Not being a Member of the League).....212
आर्थिक समस्याएँ (Economic Problems) 212
सदस्यों के बीच संदेह और सदस्यता वापस लेना (Suspicion among Members and Withdrawal of Membership) 212
15.7 राष्ट्र संघ: आलोचनात्मक विश्लेषण (League of Nations: A Critical Analysis)................213
15.8 राष्ट्र संघ का समापन (Demise of League of Nations) 213

अध्याय 16

1918-39 के मध्य विश्व (World Between 1918-39) 215
16.1 परिचय (Introduction)..215
16.2 संयुक्त राज्य अमेरिका (United States of America – USA) 216
आर्थिक बदहाली (Economic Misery)....................216
1929 की दुर्घटना (Crash of 1929).......................216
न्यू डील (New Deal)..216
संयुक्त राज्य अमेरिका और विश्व (USA and World) 217
16.3 यूएसएसआर (USSR) 217
युद्ध साम्यवाद (War Communism) 218
नई आर्थिक नीति (New Economic Policy – NEP)..........................218
यूएसएसआर का गठन (Formation of USSR)...........219
यूएसएसआर की विदेश नीति (Foreign Policy of USSR).................................219
16.4 जापान (Japan) 219
विस्तारवादी नीति (Expansionist Policy).................219
सैन्य फ़ासीवाद (Military Fascism).........................220
16.5 भारत (India) 220
16.6 चीन (China) 221

16.7 कोरिया (Korea)....222
16.8 दक्षिण-पूर्व एशिया (South-East Asia)....222
फ़िलीपींस (Philippines)....223
हिंद-चीन (Indo-China)....223
इंडोनेशिया (Indonesia)....223
म्याँमार (Myanmar)....223
श्रीलंका (Sri Lanka)....223
16.9 पश्चिम एशिया (West Asia)....223
अफ़ग़ानिस्तान (Afghanistan)....223
ईरान (Iran)....223
इराक़ (Iraq)....224
फ़िलिस्तीन (Palestine)....224
सीरिया और लेबनान (Syria and Lebanon)....225
16.10 अफ़्रीका (Africa)....225
उत्तरी अफ़्रीका (North Africa)....225
दक्षिण अफ़्रीका (South Africa)....226
अखिल अफ़्रीकी कांग्रेस (Pan African Congress)....226
नीग्रो आंदोलन (Negritude Movement)....226
दक्षिण अफ़्रीका में नस्लीय उत्पीड़न (Racial Oppression in South Africa)....227
16.11 लैटिन अमेरिका (Latin America)....227
मैक्सिको (Mexico)....227
अमेरिकी नीति में बदलाव (Changes in US Policy)....227
16.12 यूरोप (Europe)....228
यूरोप में नए राज्य (New States in Europe)....228
अधिनायकवादी शासन व्यवस्था का उदय (Rise of Authoritarian Regimes)....229
इटली में फ़ासीवाद (Fascism in Italy)....229
1924 से 1936 ईस्वी तक यूरोप (Europe from 1924 to 1936 AD)....230

अध्याय 17

द्वितीय विश्वयुद्ध (World War-II)....235
17.1 परिचय (Introduction)....235
17.2 द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण (Causes of World War-II)....235
दीर्घकालिक कारण (Long-term Causes)....235
तात्कालिक कारण (Immediate Cause)....237
17.3 युद्ध की घटनाएँ (Events of War)....237
पोलैंड का अधिग्रहण (Polish Occupation)....237
डेनमार्क और नॉर्वे की विजय (Conquest of Denmark and Norway)....238
ब्रिटेन का युद्ध (Battle of Britain):....238
अन्य युद्ध क्षेत्र (Other Theatres of War)....239
यूएसएसआर पर जर्मन आक्रमण (German Invasion of USSR)....239
युद्ध में यूएसए का प्रवेश (US Entry into the War)....241
स्टालिनग्राद का युद्ध (Battle of Stalingrad)....242
उत्तरी अफ़्रीका और प्रशांत क्षेत्र में युद्ध (War in North Africa and Pacific)....242
मित्र राष्ट्रों की विजय (Allied Victory)....243
जर्मनी का आत्म-समर्पण (Surrender of Germany)....243
जापान का आत्म-समर्पण (Surrender of Japan)....244
परमाणु बम (Atom Bombs)....244
17.4 द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रभाव (Impact of World War-II)....244
17.5 द्वितीय विश्वयुद्ध: आलोचनात्मक विश्लेषण (World War-II: Critical Analysis)....245
17.6 संयुक्त राष्ट्र घोषणा-पत्र (United Nations Charter)....246

इकाई – IV: 1945 के पश्चात् विश्व

अध्याय 18

शीतयुद्ध (Cold War)....249
18.1 परिचय (Introduction)....249
18.2 शीतयुद्ध का विस्तार (Extent of Cold War)....249
18.3 अर्थ/परिभाषा (Meaning/Definition)....250
18.4 शीतयुद्ध की प्रकृति (Nature of Cold War)....250
18.5 मार्शल योजना (Marshall Plan)....251
18.6 शीतयुद्ध के कारण (Causes of Cold War)....251
18.7 शीतयुद्ध हेतु उत्तरदायी कारक (Factor Responsible for Cold War)....251
स्टालिन (Stalin)....251
ट्रूमैन सिद्धांत (Truman Doctrine)....251
संयुक्त राज्य अमेरिका तथा सोवियत संघ की नीतियाँ (Both US and USSR)....252
18.8 शीतयुद्ध का विकास (Evolution of Cold War)....252
प्रथम चरण (Phase I) (1946-62)....252
18.9 शीतयुद्ध का अंत (End of Cold War)....254
18.10 शीतयुद्ध की समाप्ति के लिए उत्तरदायी कारक (Factors that Led to End of Cold War)....254
साम्यवाद की सीमाएँ (Limitations of Communism)....254
गोर्बाचेव के सुधारों का प्रभाव (Impact of Gorbachev's Reform)....254
अमेरिका की नीति और 'द्वितीय' शीतयुद्ध (US Policy and 'Second' Cold War)....255
आर्थिक और सांस्कृतिक वैश्वीकरण (Economic and Cultural Globalization)....255
18.11 निष्कर्ष (Conclusion)....255

अध्याय 19

मध्य-पूर्व में संघर्ष

(Conflict in the Middle East) 258
19.1 मध्य-पूर्व: एक अशांत क्षेत्र
(Middle East: A Troubled Region) 258
19.2 इज़रायल का गठन (Creation of Israel) 259
इज़रायल युद्ध के कारण
(Reasons for Israel War) 259
युद्ध की ज़िम्मेदारी
(Responsibility for the War) 259
युद्ध और उसके परिणाम
(War and Its Outcome) 260
19.3 स्वेज़ युद्ध (Suez War) 260
भिन्न-भिन्न विचार (Differing Opinions) 260
युद्ध के लिए तैयारी (Build-up to War) 260
युद्ध की प्रमुख घटनाएँ (Events in War) 261
स्वेज़ युद्ध के परिणाम (Outcome of Suez War) 262
19.4 छह दिवसीय युद्ध (Six-Day War) 262
युद्ध के लिए तैयारी (Build-up to War) 262
युद्ध के परिणाम (Results of War) 263
19.5 योम किप्पुर युद्ध (1973)
[Yom Kippur War (1973)] 263
युद्ध के लिए तैयारी (Build-up to War) 263
युद्ध के कारण (Course of War) 264
युद्ध के परिणाम (Outcome of War) 264
19.6 मिस्र-इज़रायल शांति (Egypt-Israel Peace) 264
कैंप डेविड शांति संधि
(Camp David Peace Treaty) 264
संधि के पश्चात् मिस्र और इज़रायल
(Egypt and Israel after the Treaty) 264
इज़रायल और पीएलओ के मध्य शांति
(Peace between Israel and PLO) 265
ओस्लो समझौता (Oslo Accord) 265
फ़िलिस्तीनियों के लिए स्वशासन
(Self-rule for Palestinians) 265
19.7 लेबनान संघर्ष (Lebanon Conflict) 265
गृहयुद्ध के कारण (Causes of Civil War) 266
संघर्षों का विस्तार (Continuation of Conficts) 266
शांति की बहाली (Restoration of Peace) 267
19.8 34 दिवसीय युद्ध (34 Day War) 267
19.9 ईरान-इराक़ युद्ध (Iran-Iraq War) 267
इराक़ पर आक्रमण के कारण
(Causes of Iraq Invasion) 267
सद्दाम हुसैन की अदूरदर्शिता
(Miscalculations by Saddam Hussein) 268
इराक़ का हमला तथा ईरान का प्रतिशोध
(Iraqi Attack and Iranian Retaliation) 268
युद्ध का अंत (End of War) 269
युद्ध के परिणाम (Consequences of War) 269
ईरान-इराक युद्ध की विशेषताएँ
(Features of Iran-Iraq War) 269
19.10 खाड़ी युद्ध (Gulf War) 270
खाड़ी युद्ध के कारण (Causes of Gulf War) 270
युद्ध का क्रम (Course of War) 271
युद्ध का अंत (End of War) 271
19.11 ईरान समस्या (Iran Problem) 272
ईरान: इस्लामी गणतंत्र (Iran: Islamic Republic) 272
19.12 अरब स्प्रिंग (Arab Spring) 273
प्रदर्शनकारियों की माँगें (Demands of Protesters) 273
अरब स्प्रिंग के कारण (Causes of Arab Spring) 273
प्रभावित देश (Countries Affected) 274
प्रमुख घटनाएँ (Major Events) 274
19.13 निष्कर्ष (Conclusion) 276

अध्याय 20

अफ़्रीका में विऔपनिवेशीकरण और समस्याएँ

(Decolonization and Problems in Africa) 279
20.1 परिचय (Introduction) 279
20.2 विऔपनिवेशीकरण के कारण
(Reasons for Decolonisation) 280
उपनिवेशों में राष्ट्रवादी आंदोलन
(Nationalist Movements in Colonies) 280
द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रभाव
(Effects of the 2nd World War) 280
पैन अफ़्रीकावाद (Pan Africanism) 280
अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र का दबाव
(Pressure from US and UN) 281
20.3 भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति
(India Gets Independence) 281
पृष्ठभूमि (Background) 281
भारत का विभाजन (Partition of India) 281
20.4 मलाया प्रायद्वीप का विऔपनिवेशीकरण
(Decolonization of Malaya Peninsula) 282
पृष्ठभूमि (Background) 282
द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् (Post World War II) 283
1963 में विलय के पश्चात् (Post-Merger in 1963)..285
20.5 अफ़्रीका से ब्रिटिश निकास
(British Exit From Africa) 285
पश्चिम अफ़्रीका (West Africa) 285
पूर्वी अफ़्रीका (East Africa) 286

20.6 फ्राँसीसी साम्राज्य का अंत
(End of French Empire)....288
हिंद-चीन (Indo-China)....289
ट्यूनीशिया (Tunisia)....289
मोरक्को (Morocco)....289
अल्जीरिया (Algeria)....290
अफ्रीका में फ्राँस के अन्य उपनिवेश
(Other Colonies of France in Africa)....290

20.7 अन्य औपनिवेशिक शक्तियाँ
(Other Colonial Powers)....291
नीदरलैंड्स (Netherland)....291
बेल्जियम (Belgium)....291
स्पेन (Spain)....292
पुर्तगाल (Portugal)....292
इटली (Italy)....293
विऔपनिवेशीकरण- विश्लेषण
(Decolonisation – An Analysis)....293

20.8 विऔपनिवेशीकरण से उत्पन्न समस्याएँ
(Problems Created by Decolonisation)....293
अफ्रीकी राज्यों के लिए सामान्य समस्याएँ
(Problems Common to African States)....294
विशिष्ट समस्याएँ (Specific Problems)....295
दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद
(Apartheid in South Africa)....297

20.9 21वीं सदी में अफ्रीका की समस्याएँ
(Problems of Africa in 21st Century)....298

अध्याय 21

1945 के पश्चात् लैटिन अमेरिका और यूरोप
(Latin America and Europe After 1945)....301

21.1 लैटिन अमेरिका (Latin America)....301
ब्राजील (Brazil)....301
वेनेजुएला (Venezuela)....301
मैक्सिको (Mexico)....302
ग्वाटेमाला (Guatemala)....303
निकारागुआ (Nicaragua)....303

21.2 यूरोप (Europe)....304
परिचय (Introduction)....304
पूर्वी यूरोप (Eastern Europe)....305
साम्यवादी सूचना ब्यूरो
(Communist Information Bureau)....305
उत्तर अटलांटिक संधि संगठन
(North Atlantic Treaty Organization)....309

विश्व इतिहास
घटनाओं का कालक्रम

1215 मैग्ना कार्टा पर इंग्लैंड के राजा जॉन ने रनीमेड में हस्ताक्षर किये

1300 इटली में पुनर्जागरण प्रारम्भ हुआ

1337 शतवर्षीय युद्ध (1337-1453) इंग्लैण्ड और फ्रांस

1347 यूरोप में ब्यूबोनिक प्लेग फैला

1450 चलायमान टाईप मुद्रण की तकनीक के साथ 14 वीं सदी के मध्य में यूरोप में पहली पुस्तक का मुद्रण

1453 ओटोमन तुर्कों ने कॉन्स्टेंटिनोपल (इस्तांबुल) पर कब्जा कर लिया।

1492 कोलम्बस ने अमेरिका की खोज की

1498 वास्को डी गामा ने भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज की

1500 सुधार के कारण प्रोटेस्टेंटवाद का जन्म हुआ

1517 जर्मनी में मार्टिन लूथर द्वारा सुधार आंदोलन की शुरुआत

1519 फर्डिनेंड मैगलन ने पहली बार ग्लोब का चक्कर लगाने वाली यात्रा की कमान संभाली।

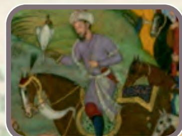

1526 बाबर ने भारत पर आक्रमण किया और मुगल साम्राज्य की स्थापना की

1543 निकोलस कोपरनिकस ने प्रस्तावित किया कि सूर्य ब्रह्मांड का केंद्र है

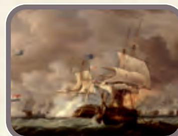

1651 1651 में नेविगेशन अधिनियम पारित किया गया

1688 इंग्लैंड में गौरवशाली क्रांति हुई

1750 इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति प्रारम्भ हुई

1756 7 वर्षीय युद्ध (1756-1763): इंग्लैण्ड ने फ्रांस को हराया

1764 जेम्स हरग्रीव्स ने स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किया

1765 स्टाम्प अधिनियम 1765 में पारित किया गया

1767 टाउनशेंड अधिनियम पारित किया गया

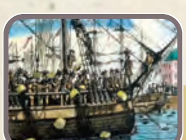

1773 बोस्टन टी पार्टी

1774 फिलाडेल्फिया में प्रथम महाद्वीपीय कांग्रेस

1776 अमेरिकी उपनिवेशों ने स्वतंत्रता की घोषणा की

1783 संयुक्त राज्य अमेरिका अस्तित्व में आया

1789 फ्रांस की क्रांति शुरू हुई

1801 नेपोलियन ने कैथोलिक चर्च के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए

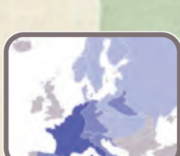

1806 नेपोलियन के बर्लिन आदेश से महाद्वीपीय व्यवस्था की शुरुआत हुई

1815 वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन बोनापार्ट की हार

1821 मैजिनी ने 'यंग इटली' की स्थापना की

1830 फ्रांस में जुलाई क्रांति की सफलता के बाद यूरोप में 1830 की क्रांति शुरू हुई

1848 फ्रांस में फरवरी क्रांति की सफलता के बाद यूरोप में 1848 की क्रांति शुरू हुई

1858 ग्रेट ब्रिटेन ने भारत का शासन अपने हाथ में ले लिया

1861 अमेरिका में गृह युद्ध शुरू हुआ

1864 प्रथम इंटरनेशनल का गठन हुआ

1869 स्वेज नहर खोली गई

विश्व इतिहास
घटनाओं का कालक्रम

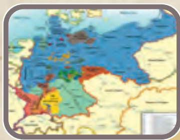

1870
जर्मनी का एकीकरण पूरा हुआ

1871
जर्मनी प्रशिया राजा के अधीन एकीकृत हुआ

1884
बर्लिन कांग्रेस ने अफ्रीका को यूरोपीय उपनिवेशवादियों के बीच विभाजित किया

1889
द्वितीय इंटरनेशनल का गठन हुआ

1899
दक्षिण अफ्रीका में बोअर युद्ध शुरू हुआ

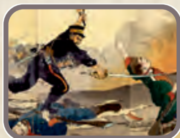

1904
जापान ने रूस को पराजित किया।

1905
रूस में क्रांति के बाद जार निकोलस ने अक्टूबर घोषणापत्र की घोषणा की।

1914
साराजेवो में आर्चड्यूक फर्डिनेंड की हत्या कर दी गई जिसके कारण प्रथम विश्व युद्ध हुआ।

1917
रूसी क्रांति शुरू हुई।

1918
अमेरिकी राष्ट्रपति विल्सन ने 14 सूत्रों का सुझाव दिया।

1919
वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर। प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हो हुआ।

1920
राष्ट्र संघ का उद्घाटन

1921
रूस में नई आर्थिक नीति लागू हुई

1930
अमेरिका में महामंदी आयी

1933
हिटलर जर्मनी का चांसलर बना

1936
स्पेन में गृह युद्ध शुरू हुआ

1939
द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ

1941
जापान ने पर्ल हार्बर पर हमला किया, जिससे अमेरिका द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल हुआ

1943
1919 में गठित तृतीय इंटरनेशनल भंग

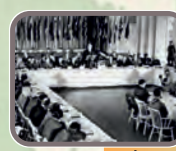

1944
ब्रेटनवुड्स सम्मेलन

1945
द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हुआ

1947
भारत स्वतंत्र हुआ

1948
बर्लिन नाकाबंदी शुरू हुई

1949
चीन की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा जनवादी चीन गणराज्य की घोषणा की गई

1950
कोरियाई युद्ध शुरू हुआ

1955
वियतनाम युद्ध शुरू हुआ

1956
गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की स्थापना

1962
क्यूबा मिसाइल संकट

1967
छह दिवसीय युद्ध प्रारम्भ

1973
योम किप्पुर युद्ध शुरू हुआ

1980
ईरान पर इराकी आक्रमण के साथ ईरान-इराक युद्ध शुरू हुआ

1989
सोवियत संघ का विघटन

1991
शीतयुद्ध समाप्त हुआ

2006
लेबनान में 34 दिवसीय युद्ध प्रारम्भ

2011
ट्यूनीशिया में अरब क्रांति की शुरुआत हुई

17 वीं सदी का विश्व मानचित्र

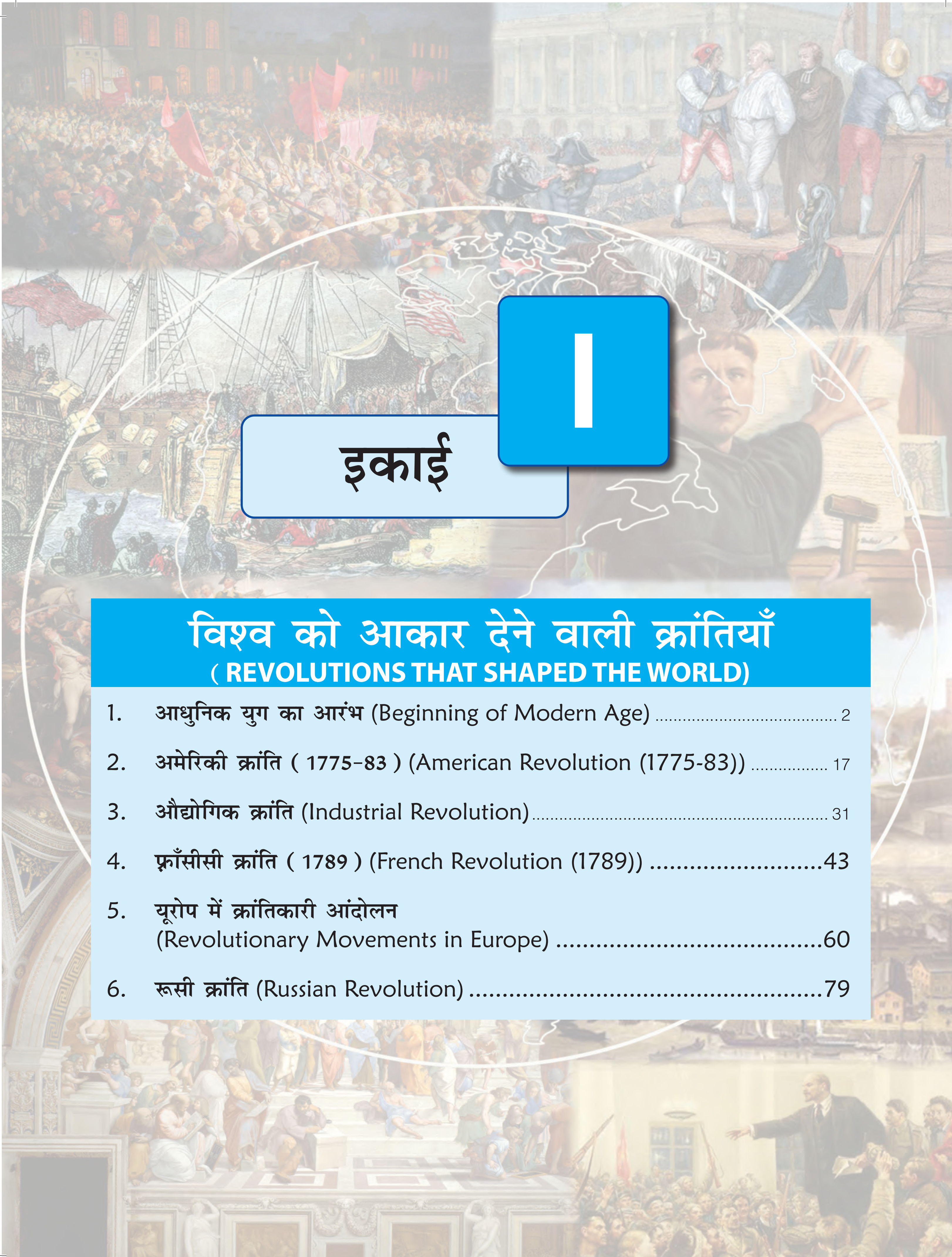

इकाई I

विश्व को आकार देने वाली क्रांतियाँ
(REVOLUTIONS THAT SHAPED THE WORLD)

1. आधुनिक युग का आरंभ (Beginning of Modern Age) 2
2. अमेरिकी क्रांति (1775-83) (American Revolution (1775-83)) 17
3. औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution) 31
4. फ्राँसीसी क्रांति (1789) (French Revolution (1789)) 43
5. यूरोप में क्रांतिकारी आंदोलन (Revolutionary Movements in Europe) 60
6. रूसी क्रांति (Russian Revolution) 79

अध्याय
1

आधुनिक युग का आरंभ
(BEGINNING OF MODERN AGE)

1.1 परिचय (Introduction)

5वीं शताब्दी से लेकर 15वीं शताब्दी तक के काल के इतिहास को मध्यकाल या मध्यकालीन इतिहास माना जाता है। यह काल रोमन साम्राज्य के पतन के साथ आरंभ होते हुए भौगोलिक खोज व पुनर्जागरण के युग तक जारी रहा। 14वीं से 17वीं शताब्दी के बीच यूरोप में विचारकों, लेखकों और कलाकारों के द्वारा हुए सांस्कृतिक व धार्मिक प्रगति आंदोलन को ही पुनर्जागरण (Renaissance) कहा जाता है। इस युग में कई परिवर्तनों के साथ-साथ कई ऐसी गहरी धार्मिक मान्यताओं का भी उदय हुआ, जिनसे लोगों के जीवन से निकटता से जुड़े सभी धार्मिक पक्ष संबंधित थे।

इस युग में लगभग सभी विचारकों ने दर्शन को धर्म से संबद्ध करने पर बल दिया, जो शिक्षाप्रद (Informative) व बुद्धिपरक (Rational) होने के बजाय सत्तावादी (Authoritarian) था। इस प्रवृत्ति ने समाज को इसकी कई संस्थाओं के शोषण के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बना दिया था। सामंतवाद (Feudalism) यूरोप में प्रचलित इस युग की मुख्य विशेषता थी।

1.2 सामंतवाद (Feudalism)

फ्यूडलिज़्म (सामंतवाद) शब्द की उत्पत्ति 'फ्यूड' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है "भूमि का सशर्त स्वामित्व"। इसे 9वीं से 15वीं शताब्दी ईसवी तक यूरोप में प्रचलित राजनीतिक संगठन की प्रणाली के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह कुलीन (Lord) और जागीरदार या सामंत के विशेष संबंधों पर आधारित था। इसकी प्रमुख विशेषता यह थी कि सामंतों को भूमि, उपहार के रूप में मिली थी और इस संदर्भ में सामंत राजदरबार के प्रति सेवाभाव प्रकट करते थे, काश्तकारों की सेवाएँ उपलब्ध कराते थे तथा युद्ध व ज़ब्ती के दौरान सैन्य सहायता उपलब्ध कराते थे। दूसरे शब्दों में, सामंतवाद भू-स्वामित्व और कर्त्तव्यों की एक प्रणाली थी। सामंतवाद के अंतर्गत एक राज्य की संपूर्ण भूमि राजा की होती थी। हालाँकि, राजा भूमि का कुछ हिस्सा उन लॉर्डों या कुलीन वर्ग को दे देता था, जो उसके लिए लड़ते थे।

सामंती पदानुक्रम में शीर्ष पर राजा होता था। राजा के नीचे के कुलीन व्यक्तियों को भी अधिपतियों (Overlords) और अधीनस्थ कुलीनों (Sub-Ordinate) के पदानुक्रम में व्यवस्थित किया गया था। प्रत्येक कुलीन व्यक्ति केवल अपने अधिपति का ही सामंत होता था।

यह पदानुक्रमित प्रणाली अटूट थी, अर्थात् निम्न स्तर का कुलीन केवल अपने आसन्न कुलीन के आदेशों का पालन करेगा, न कि पदानुक्रम के उच्च कुलीन का।

इसके अलावा, कोई भी लॉर्ड स्वयं अपने अधीन भूमि का प्रत्यक्ष स्वामी नहीं था। वह अपने अधिपति के नाम पर भूमि का स्वामी था। इस प्रकार क़ानूनी तौर पर, संपूर्ण क्षेत्र राजा का होता था। प्रत्येक लॉर्ड के अपने सैनिक थे और वह अपनी संपदा का एकमात्र अधिकारी था। इस प्रकार कार्यात्मक दृष्टि से कोई केंद्रीय सत्ता नहीं थी और राजा केवल क़ानूनी दृष्टि से केंद्रीय सत्ता का संचालक था। इसके परिणामस्वरूप बहुत कम राजनीतिक एकता थी।

सामंतवाद के विकास का मुख्य कारण पश्चिमी यूरोप में एक केंद्रीय राजनीतिक सत्ता का अभाव था, क्योंकि यह कई छोटे और बड़े राज्यों में विघटित हो गया था। ऐसी व्यवस्था में स्थानीय लॉर्ड समाज के मामलों को नियंत्रित करने लगे थे, जिसके परिणामस्वरूप वे स्वयं राजा से अधिक शक्तिशाली हो गए थे। यह दौर 16वीं शताब्दी के आरंभ तक चलता रहा।

राजाओं के लिए विशाल भूमि क्षेत्रों का प्रशासन करना जटिल था। परिणामस्वरूप, उन्होंने अपनी भूमि अपने सामंतों के बीच बाँट दी थी, जिन्होंने इस भू-स्वामित्व और हस्तांतरित अधिकारों के बदले में आवश्यकता पड़ने पर राजा को सैन्य सहायता देने का आश्वासन दिया था।

यह कई शताब्दियों तक अपने उद्देश्य की पूर्ति करता रहा, जब तक लॉर्ड अपनी जागीर में निवास करने वाले लोगों के जीवन व संपत्ति की सुरक्षा की गारंटी के रूप में कार्य करता रहा। हालाँकि कालांतर में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में आए परिवर्तनों से इसकी उपयोगिता समाप्त हो गई थी।

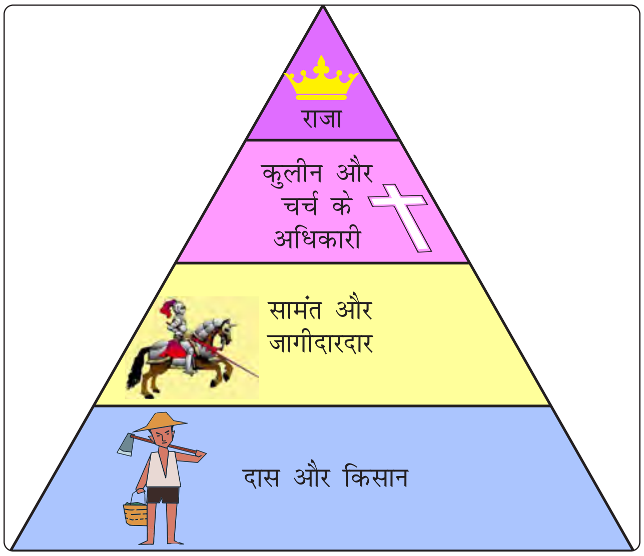

सामंतवाद के पतन के कारण (Causes of Decline of Feudalism)

सामंतवाद के पतन के लिए अनेक कारक उत्तरदायी थे। चूँकि, सामंतवाद शासकीय कार्यों के लिए प्रदान किए जाने वाले भू-अधिकार के विचार पर आधारित था, अत: ऐसी प्रत्येक प्रक्रिया, जिसने इस व्यवस्था में परिवर्तन किया, उसने सामंतवाद को भी विस्थापित करने का प्रयास किया था। इसके साथ-साथ, सामंतवाद ने अपनी उपयोगिता के उच्चतम बिंदु को प्राप्त कर लिया था, जिससे इसकी आवश्यकता समाप्त हो गई थी। इसलिए, जब नए परिवर्तन हुए तो सामंतवाद का पतन हुआ।

सामंतवाद के पतन के कुछ मुख्य कारण थे:

- शतवर्षीय युद्ध (Hundred Years War)
- ब्लैक डेथ [Black Death (1348-49)]
- राजनीतिक बदलाव (Political Changes)
- सामाजिक अशांति (Social Unrest)
- कृषि-दासों की मुक्ति (Liberation of the Serfs)
- धर्म युद्ध (Holy Wars)

शतवर्षीय युद्ध (Hundred Years War)

सामंतवाद की सफलता के लिए पर्याप्त जनशक्ति का होना, इसकी प्रमुख आवश्यकता थी। सामंत और कृषि दास क़ानूनन साल-दर-साल जीवनपर्यंत श्रमिक के रूप में जागीरों में काम करते थे, लेकिन 1337 ई. में इंग्लैंड और फ़्राँस के बीच युद्ध छिड़ने पर दोनों देशों ने एक विशिष्ट सैन्य बल के गठन का कार्य आरंभ किया था। इससे एक शतवर्षीय युद्ध का आरंभ हुआ। यह रुक-रुक कर होने वाले संघर्षों की एक शृंखला थी, जो 1453 ई. तक चली। दोनों देशों की सेना में सामंती श्रमिकों की संख्या बढ़ गई। इससे ऐसे आम लोगों की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई थी, जिनके बारे में माना जाता था कि वे ठीक-ठाक सैन्य कौशल रखते हैं। इसके परिणामस्वरूप जागीरदारी व्यवस्था कमज़ोर हो गई थी।

ब्लैक डेथ [Black Death (1348-49)]

1340 के दशक में यूरोप में बुबोनिक प्लेग फैल गया था। यह प्लेग इटली से उत्तर की ओर फैला और ब्लैक डेथ नामक जीवाणु के संक्रमण ने पश्चिमी यूरोप की कुल जनसंख्या के कम-से-कम एक-तिहाई हिस्से को अपनी चपेट में ले लिया था। फ़्राँस और इंग्लैंड के युवाओं के युद्ध में शामिल होने से कृषि उत्पादन में पहले से ही कमी हो रही थी। अब सामंतवाद के सामने एक नई चुनौती उत्पन्न हो गई थी। एक के बाद एक सामंतों को बड़ा नुक़सान उठाना पड़ा। स्थितियाँ इतनी गंभीर हो गई थीं कि पलायन को क़ानूनन दंडनीय अपराध घोषित करने के बावजूद भी बड़ी संख्या में मज़दूर बड़े शहरों की ओर चले गए थे।

राजनीतिक बदलाव (Political Changes)

सामंतवाद एक दमनकारी व्यवस्था थी, जो बहुत सीमित व्यक्तिगत स्वतंत्रताएँ प्रदान करती थी। पुराने कानूनों किसानों को कृषि बाध्य् कर दिया था। जिससे वे दासों की श्रेणी में आ गए थे। फिर भी समय के साथ-साथ इंग्लैंड जैसे देशों में व्यक्तिगत अधिकारों की अवधारणाएँ धीरे-धीरे प्रबल हुई थीं। उदाहरण के लिए, हेनरी द्वितीय के 12वीं शताब्दी के सुधारों ने क़ानूनी अधिकारों का विस्तार किया था। 1215 ईसवी में किंग जॉन 'मैग्नाकार्टा' को मंज़ूरी देने के लिए बाध्य हो गया था। मैग्नाकार्टा जन-क़ानूनों को बनाए रखने को राजा का उत्तरदायित्व घोषित करने वाला दस्तावेज़ था।

80 वर्षों के बाद एडवर्ड प्रथम ने अंतत: आम लोगों के लिए संसदीय सदस्यता का विस्तार किया। इन सुधारों ने धीरे-धीरे कृषि दासता की अवधारणा को अक्षम्य अपराध बना दिया था।

चित्र: किंग जॉन मैग्नाकार्टा को मंज़ूरी देते हुए

सामाजिक अशांति (Social Unrest)

1350 के दशक तक युद्ध और बीमारी ने यूरोप की जनसंख्या को इस सीमा तक कम कर दिया कि किसानों के श्रम की महत्ता बढ़ गई थी। फिर भी कृषि दासों की स्थिति अत्यधिक दयनीय थी। उनके वेतन पर अभी भी भारी कर लगाया जाता था। जिसके चलते उनका वेतन भी कम था। इन परिस्थितियों में यूरोप के किसानों ने विद्रोह कर दिया था। 1350 और 1390 के दशक के बीच इंग्लैंड, फ्लैंडर्स (वर्तमान बेल्जियम का डच भाषी उत्तरी भाग), फ्राँस, इटली, जर्मनी और स्पेन में विद्रोह हुए थे। 1381 ईसवी में एक ब्रिटिश विद्रोह के बाद रिचर्ड द्वितीय ने दास प्रथा को समाप्त करने का वादा किया था। यद्यपि फिर वह अपने वादे को पूरा करने में असफल रहा, तथापि अगली शताब्दी में दास प्रथा समाप्त हो गई थी।

कृषि-दासों की मुक्ति (Liberation of the Serfs)

व्यापार और वाणिज्य में तीव्र वृद्धि के कारण कृषि-दासों की मुक्ति ने भी सामंतवाद के पतन में बहुत बड़ा योगदान दिया था। व्यापार और वाणिज्य के विकास के साथ कई नए शहरों और कस्बों का भी विकास हुआ, जिससे काम के नए अवसर उपलब्ध हुए। नए शहरों में काम करने से कृषि-दासों को अपने सामंती मालिकों/स्वामियों से मुक्त होने का अवसर मिला था।

धर्म युद्ध (Holy Wars)

1095 ईसवी में पोप ने पवित्र भूमि को मुक्त कराने के लिए ईश्वर के नाम पर युद्ध का आह्वान करने में बाइज़ेंटाइन सम्राट का साथ दिया था। 1095 ईसवी से 1291 के बीच पश्चिमी यूरोपीय ईसाइयों ने पूर्वी भूमध्यसागर (Levant) के तटीय मैदानों पर मुस्लिम शहरों के विरुद्ध युद्ध की योजना बनाई और युद्ध लड़े। इन युद्धों को बाद में धर्मयुद्ध का नाम दिया गया।

धर्मयुद्ध ने सामंती व्यवस्था के पतन में बहुत बड़ा योगदान दिया। इन युद्धों के परिणामस्वरूप यूरोपीय लोगों ने मुसलमानों से बारूद का उपयोग करना सीखा। बारूद की खोज ने सामंती महलों के महत्त्व को बहुत कम कर दिया था। परिणामस्वरूप, सामंती कुलीनों के लिए इन महलों में शरण लेना और राजा की सत्ता की अवहेलना करना संभव नहीं रह गया था।

अन्य कारण (Other Causes)

कई अन्य कारणों से भी सामंतवाद का पतन हुआ था; जैसे:

- मध्यकाल के दौरान धर्मयुद्ध और खोजी यात्राओं ने इंग्लैंड के लिए नए व्यापार के विकल्प खोल दिए थे।
- इंग्लैंड भूमि-आधारित अर्थव्यवस्था से धन-आधारित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने लगा था।
- किसान विद्रोह – किसानों को अपनी कीमत का अनुभव हुआ और उन्होंने परिवर्तन की माँग की।
- व्यापार में वृद्धि से अधिक शहरों का विकास हुआ।
- किसान गाँवों से दूर शहरों की ओर पलायन कर गए, जहाँ अंततः उन्हें अपनी स्वतंत्रता प्राप्त हुई।
- भूमि किराए पर दी जाने लगी और श्रमिकों पर सामंतों का अधिकार कम हो गया।
- सामंती व्यवस्था अलोकप्रिय होती गई और जैसे-जैसे समय बीतता गया, कुलीन वर्ग ने लड़ने और सेना बढ़ाने के बजाय, राजा को भुगतान करना उचित समझा।
- सैनिकों को वेतन दिया जाने लगा और मध्यकालीन युद्ध को करों व ऋणों द्वारा वित्त-पोषित किया जाता था।
- कुलीन वर्ग कमज़ोर हो गए – राजाओं ने सामंतों को दी गई अपनी भूमि और शक्ति वापस ले ली थी।

1.3 चर्च की भूमिका (Role of Church)

मध्यकाल के उत्तरार्द्ध में यूरोपवासियों में ईश्वर के साथ प्रत्यक्ष जुड़ाव की इच्छा थी, फिर चाहे वह जुड़ाव निजी हो, आंतरिक उल्लास के रूप में या रहस्यमयी प्रबोधन के रूप में हो। ईसाई धर्म प्रचारकों ने ईसा मसीह के जीवन का अनुकरण करने के लिए उसे एक मॉडल के रूप में उपयोग करते हुए, खुद को धर्म-प्रचारक समुदायों में संगठित करना आरंभ कर दिया था। धर्म-संबंधी भावनाएँ तथा ईसा मसीह के साथ होने और उनके अनुयायी बनने की प्रथा बढ़ रही थी।

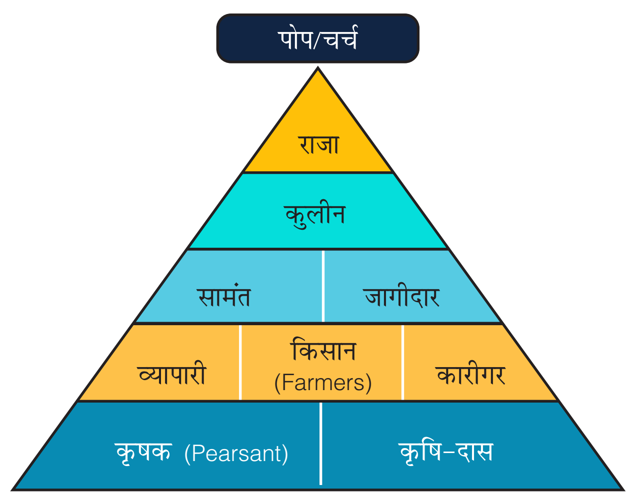

मध्य-काल के दौरान, चर्च दैनिक जीवनचर्या का एक प्रमुख हिस्सा था। चर्च लोगों के आध्यात्मिक मार्गदर्शन का कार्य भी करता था और उनकी सरकार के रूप में भी काम करता था। मध्यकालीन यूरोपीय जीवन में चर्च सबसे प्रमुख संस्था थी और इसका प्रभाव लोगों के जीवन के लगभग हर आयाम पर था।

इसके धार्मिक संस्कारों ने कैलेंडर को एक रूप दिया तथा इसके धार्मिक अनुष्ठानों ने लोगों के जीवन में महत्त्वपूर्ण संस्कारों को चिह्नित किया; जैसे- बपतिस्मा, विवाह, तपस्या, पवित्र आदेश और

अंतिम संस्कार इत्यादि। इसकी शिक्षाएँ नैतिकता, जीवन के अर्थ और उसके बाद के जीवन के बारे में मुख्यधारा की मान्यताओं को रेखांकित करती थीं। हालाँकि वर्तमान में चर्च की भूमिका सीमित है।

पोप (Pope)

पश्चिमी चर्च का मुख्यालय रोम में था। मध्यकाल के अधिकांश समय यह पोप का मुख्य निवास स्थान रहा था। पश्चिमी चर्च ने मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण और शक्तियाँ बनाए रखी थीं।

चर्च प्रणाली (Church System)

कैथोलिक चर्च के अपने क़ानून थे। शासकों द्वारा दी गई भूमि, चर्च के स्वामित्व में थी और चर्च उस पर कर भी लगा सकता था। इस प्रकार यह एक बहुत शक्तिशाली संस्था थी, जो सामान्यत: राजा पर निर्भर नहीं थी। पश्चिमी चर्च का मुखिया पोप था। वह रोम में रहता था। यूरोप में ईसाइयों का मार्गदर्शन बिशपों और पादरियों द्वारा किया जाता था, जो इस प्रणाली के उच्च पदानुक्रम में आते थे। अधिकांश गाँवों का अपना चर्च होता था, जहाँ लोग हर रविवार को पादरियों के उपदेश सुनने और एकसाथ प्रार्थना करने के लिए एकत्रित होते थे।

1054 ईसवी में यूरोपीय ईसाई चर्च दो प्रमुख शाखाओं में विभाजित हो गया था - पश्चिमी चर्च और पूर्वी चर्च। इस विभाजन को "महान पूर्वी विभाजन" या "1054 ईसवी की फूट" के रूप में जाना जाता है। पूर्वी चर्च ने अपना नाम पूर्वी रूढ़िवादी चर्चा रखा और पश्चिमी चर्च ने अपना नाम रोमन कैथोलिक चर्च (Roman Catholic Church) रखा। पूर्वी रूढ़िवादी चर्च (Eastern Orthodox Church) ने सार्वभौमिक ईसाई धर्म पर पोप की केंद्रीय सत्ता को स्वीकार करने से मना कर दिया था।

एक प्रमुख शक्ति के रूप में चर्च की सफलता का श्रेय काफ़ी हद तक इससे एक अत्यधिक विकसित संगठन को दिया जा सकता है, जिसने मध्यकाल के दौरान शासन, क़ानून और अर्थव्यवस्था की एक मज़बूत प्रणाली विकसित की थी। संस्थागत चर्च को दो असमान भागों में विभाजित किया जा सकता है: दोनों में से जो बड़ा चर्च था, वह एक पंथनिरपेक्ष चर्च था, जबकि दूसरा नियमित चर्च था। नियमित चर्च के सदस्य एक मठ के नियमों की तरह नियम-पालन करते थे। पंथनिरपेक्ष चर्च, जिसमें सामान्य जनता प्रार्थना हेतु जाती थी, को आर्कबिशप (Archbishop) द्वारा शासित क्षेत्रों में विभाजित किया गया था और उनके क्षेत्रों को पादरी क्षेत्रों (Diocese) में विभाजित किया गया था। पादरी क्षेत्रों को बिशप द्वारा प्रशासित किया जाता था।

धार्मिक आदेश (Religious Orders)

मध्यकाल में कई अन्य धार्मिक आदेश जारी किए गए, जिनमें से कुछ कठोर थे, तो कुछ उदार थे। इन्हें मठ आदेश, भिक्षुक आदेश और सैन्य आदेश के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

तीर्थयात्रा (Pilgrimages)

मध्यकाल में संतों के शारीरिक अवशेष और उनसे जुड़ी वस्तुएँ तीर्थयात्रियों के लिए मुख्य आकर्षण थीं। तीर्थस्थानों की यात्राओं का उद्देश्य भक्तों द्वारा अपने पापों का प्रायश्चित करना, रोगों/कष्टों के लिए चमत्कारी उपाय खोजना और अपने सांसारिक अनुभव को बढ़ाने में सक्षम बनाना था।

मठ (Monasteries)

प्रारंभ में मठ उच्च शिक्षा के संस्थान थे और भिक्षुकों के नैतिक जीवन के उत्थान व गरीबों के कल्याण के लिए काम करते थे, लेकिन जल्द ही मठों में भ्रष्टाचार फैल गया था। मध्यकाल (600 ई. से 1500 ई.) में चर्च में निम्नलिखित बुराइयाँ आ गई थीं:

- चर्च के पदों के लिए धन + प्रत्येक अनुष्ठान के लिए धन + चर्च की अकूत संपत्ति
- पाप दूर करने के लिए धन की माँग की जाती थी। उदाहरण के लिए, चर्च ने "पाप-मोचन पत्र (Letters of Indulgence)" बेचना शुरू कर दिया था, जिसे ख़रीदने पर पापों को दूर करने के लिए तीर्थयात्रा करने की आवश्यकता समाप्त हो गई।
- मध्यकाल में चर्च शिक्षा के लिए एकमात्र संस्था थी, लेकिन भिक्षु बनकर ही यह शिक्षा ग्रहण की जा सकती थी। वे लैटिन भाषा में पढ़ाते थे, जो आम लोगों की समझ के बाहर थी।
- चर्च ने "वर्ष में एक बार" पादरी के सामने पाप स्वीकार करना अनिवार्य कर दिया था और इस नियम का उल्लंघन करने पर दंड अनिवार्य कर दिया था।
- पोप, पादरी, बिशप आदि भ्रष्ट हो गए थे और राजकुमारों की तरह जीवन जीते थे।

तर्क, ज्ञान और विज्ञान को हतोत्साहित किया गया था, जबकि अंधविश्वास (Superstition), और जादू-टोने के प्रति। लोगों के विश्वास में वृद्धि हुई और चर्च हिंसक होने लगा था। इसने उन लोगों को जलाने का आदेश दिया, जिन्होंने ईश्वर, धर्म और भौतिक घटनाओं तक के बारे में चर्च के विचारों का विरोध किया हो। ऐसा "धर्मद्रोह (Heresy)" के नाम पर किया जाने लगा। कई वैज्ञानिकों-विचारकों को चर्च ने सज़ा दी थी, जब उन्होंने ऐसे वैज्ञानिक सिद्धांत प्रस्तावित किए, जो उन सिद्धांतों को अमान्य कर देते थे, जिन्हें चर्च ने ईश्वर की महिमा करने के लिए प्रचारित किया था; जैसे- पृथ्वी चपटी है या पूरा ब्रह्मांड पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। उनमें से कई को चुड़ैलों और बुरी आत्माओं से ग्रसित बताकर ज़िंदा जला दिया गया था।

मतभेद (Dissent)

चर्च ने अंदर और बाहर के सभी असहमत लोगों पर अत्याचार और दंड दिए। जो ईसाई चर्च की शिक्षाओं से असहमत थे, उन्हें धर्मद्रोही माना जाता था और उन्हें शारीरिक रूप से दंडित किया

जा सकता था यहाँ तक की मृत्यु दंड भी दिया जा सकता था। अन्य धर्मों के लोगों के साथ भी कठोर व्यवहार किया जाता था। जो यहूदी, ईसाई क्षेत्रों में रहते थे, उन्हें अधिक प्रताड़ित किया जाता था। गैर-ईसाइयों और विधर्मियों के विरुद्ध 1095 ईसवी में मध्य-पूर्व क्षेत्र में एक सशस्त्र अभियान के साथ धर्मयुद्धों की शुरुआत हुई थी। मध्य युग को 'आस्था का युग' भी कहा जाता था।

पूरे यूरोप में 'ग़ैर-ईसाई लोगों पर अत्याचार किया गया और बड़े पैमाने पर हत्याएँ और धर्मांतरण हुए।

शिक्षा (Education)

मध्यकाल में पोप ने आदेश दिया कि चर्च कैथेड्रल स्कूलों का निर्माण करेगा, जो पादरी वर्ग के भावी सदस्यों को शिक्षित करने के लिए तैयार किए गए संस्थान होंगे। उनकी सफलता के कारण 12वीं शताब्दी में यूरोपीय विश्वविद्यालयों का विकास हुआ, जिनका शैक्षिक दायरा तेज़ी से धार्मिक प्रशिक्षण से आगे बढ़कर चिकित्सा और क़ानून के क्षेत्रों तक फैल गया। विश्वविद्यालयों के विकास का अर्थ था कि लैटिन में प्रारंभिक शिक्षा के लिए अधिक पुरुषों की आवश्यकता थी। विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए तब लैटिन की शिक्षा अनिवार्य थी। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए चर्च ने प्राथमिक शिक्षा की भी व्यवस्था की, जो पुरुषों को विश्वविद्यालयी अध्ययन के लिए तैयार करती थीं। विश्वविद्यालयों और प्राथमिक शिक्षण संस्थानों के निर्माण के माध्यम से कैथोलिक चर्च ने साक्षरता का विस्तार किया और बौद्धिक जिज्ञासा के विकास को बढ़ावा दिया।

अर्थव्यवस्था (Economy)

1095 ईसवी में पोप अर्बन द्वितीय ने यूरोपीय लोगों से मध्य-पूर्व पर युद्ध की घोषणा करने और येरूशलम को मुसलमानों से वापस लेने का आग्रह किया। इससे धर्मयुद्ध प्रारंभ हुए, जो 13वीं शताब्दी तक चले। धर्मयुद्ध सामान्यतः असफल रहे, लेकिन इसके परिणामस्वरूप यूरोप में बड़े आर्थिक परिवर्तन हुए।

पोप अर्बन द्वितीय

परिवर्तन इसलिए हुए, क्योंकि धर्मयुद्ध के कारण आर्थिक स्थिति कमज़ोर हो गई थी, और इसके लिए धनी यूरोपीय लोगों को बड़ी मात्रा में धन ख़र्च करना पड़ रहा था। धर्मयुद्ध के वित्त-पोषण के लिए चर्चों और कुलीन वर्ग लोगों ने संपत्ति बेची और ऋण लिया। उन्होंने विभिन्न सेवाओं के लिए निम्न वर्ग के लोगों को भी भुगतान किया। इन कारणों से यूरोपीय धन का बड़े पैमाने पर पुनर्वितरण हुआ। इसी समय, मध्य-पूर्व के माध्यम से नए व्यापार मार्गों, श्रेणियों के गठन और आधुनिक ऋण संस्थानों के निर्माण से आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं का जन्म हुआ तथा मध्यम वर्ग का उदय हुआ।

प्रथम धर्मयोद्धाओं का चित्र

समाज (Society)

जैसे ही 13वीं शताब्दी के अंत में धर्मयुद्ध समाप्त हुआ, यूरोप में व्यापार-वाणिज्य का विकास शुरू हुआ, जिससे यूरोपीय समाज में दो नए वर्गों का उदय हुआ: मध्यम वर्ग और अत्यंत गरीब वर्ग। कैथोलिक चर्च ने आक्रामक तरीके से ग़रीबों की रक्षा की और इस बात पर बल दिया कि वे बुनियादी अधिकारों के हक़दार हैं। चर्च ने अपनी अदालतों में ग़रीबों को अदालती शुल्क से छूट देकर और मुफ़्त क़ानूनी सलाह, भोजन, आश्रय व शिक्षा प्रदान करके, उनकी रक्षा करने का प्रयास किया।

धर्म (Religion)

मध्यकालीन जीवन के लगभग हर क्षेत्र में धर्म अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। यूरोप में अधिकांश लोग रोमन कैथोलिक चर्च के का अनुसरण करते थे। उस काल में चर्च के पास अपार धन था और उसका राजनीतिक शक्ति, सामुदायिक जीवन, कला, वास्तुकला व शिक्षा पर प्रभाव था।

1.4 पुनर्जागरण (Renaissance)

पुनर्जागरण शब्द का अर्थ उन सभी बौद्धिक परिवर्तनों से है, जो मध्यकाल के अंत में देखे जा सकते थे। फ़्राँसीसी भाषा में पुनर्जागरण शब्द का अर्थ 'पुनर्जन्म' (Rebirth) होता है, जो बौद्धिक और आर्थिक परिवर्तनों को सूचित करता है। यह यूरोपीय इतिहास में 14वीं से 17वीं शताब्दी तक का कालखंड था, जिसे मध्य युग और आधुनिक इतिहास के बीच सांस्कृतिक सेतु माना जाता है। इसके फलस्वरूप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवीन चेतना आई। यह मध्यकाल के अंत में इटली में एक सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में शुरू हुआ और बाद में यूरोप के बाक़ी हिस्सों में फैल गया, जिससे प्रारंभिक आधुनिक युग आरंभ हुआ।

ये परिवर्तन सामंतवाद के पतन, प्राचीन साहित्य के अध्ययन, राष्ट्र राज्यों के उदय, आधुनिक विज्ञान की शुरुआत, बारूद और कंपास के आविष्कार, नए व्यापारिक मार्गों की खोज और प्राथमिक पूँजीवाद के आरंभ आदि का संकेत देते हैं।

पुनर्जागरण का बौद्धिक आधार मानवतावाद का अपना नवीन संस्करण था, जो प्राचीन ग्रीक दर्शन की पुनः खोज से प्राप्त हुआ था; जैसे- प्रोटागोरस, जिसने कहा था कि "मनुष्य सभी वस्तुओं का मापदंड है"। ये नए विचार कला, वास्तुकला, राजनीति, विज्ञान और साहित्य में प्रकट हुए। प्रारंभिक उदाहरण तैल-चित्रकला (Oil-painting) में परिप्रेक्ष्य तकनीक का विकास और कंक्रीट निर्माण का पुनर्नवीनीकृत ज्ञान थे। यद्यपि 15वीं शताब्दी के अंत में धातु के पहिए के आविष्कार ने विचारों के प्रसार को गति दी, फिर भी पुनर्जागरण के दौरान हुए परिवर्तन पूरे यूरोप में समान रूप से अनुभव नहीं किए गए थे।

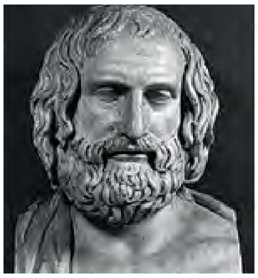
प्रोटागोरस

पुनर्जागरण के कारण (Causes of Renaissance)

धर्मयुद्ध (Crusades)

11वीं सदी के अंत से 13वीं सदी के अंत तक यूरोप में मुसलमानों से पवित्र भूमि, येरूशलम को पुनः प्राप्त करने के लिए किए गए सैन्य अभियानों को धर्मयुद्ध कहा गया। इन धर्मयुद्धों में ईसाई लोग पूर्व के प्रबुद्ध लोगों के संपर्क में आए। ग़ौरतलब है कि पूर्वी देशों में अरबों ने यूनानी एवं भारतीय सभ्यता से संपर्क स्थापित कर अपनी सभ्यता को समृद्ध किया था।

धर्मयुद्ध ने समुद्री यात्राओं और भूगोल के अध्ययन को प्रोत्साहित किया। यूरोपीय लोग लंबी यात्राओं पर निकले। ऐसे में सैनिकों ने कई लोगों से संपर्क स्थापित किए और उनसे नए विचार प्राप्त किए। जब वे वापस आए, तो धर्मयोद्धाओं का बौद्धिक स्तर बहुत व्यापक हो चुका था। उन्होंने यूरोपीय अलगाव को समाप्त करने में सहायता की थी।

वाणिज्यिक समृद्धि (Commercial Prosperity)

धर्मयोद्धाओं (Crusaders) ने पूर्वी देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए। कई यूरोपीय व्यापारी एशिया माइनर और येरूशलम के तट पर बस गए थे। परिणामस्वरूप, व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हुई, जिसने पुनर्जागरण की भावना को बढ़ावा दिया।

कागज़ और प्रिंटिंग प्रेस (Paper and the Printing Press)

मध्यकाल में यूरोपीय लोगों ने अरबों से कागज़ बनाना सीखा। 15वीं शताब्दी के मध्य में जर्मनी के जोहांस गुटेनबर्ग ने एक टाइप मशीन का आविष्कार किया, जिसे कई लोग आधुनिक प्रिंटिंग मशीन की आद्यप्रारूप (Prototype) मानते हैं। प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार ने बौद्धिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

अब ज्ञान पर विशेष व्यक्तियों का एकाधिकार समाप्त हो गया था। पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान के प्रसार के साथ अंधविश्वास और रूढ़िवादी प्रथाएँ कमज़ोर हुईं और लोगों में आत्मविश्वास बढ़ा। इसके साथ ही साक्षरता की इच्छा के साथ-साथ सांस्कृतिक जागरूकता के प्रयासों को भी गति मिली। वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुए। मनुष्य की महानता ने यूरोपीय समाज को अंधविश्वासों से अलग होकर, तर्क का मार्ग दिखाया।

तुर्कों द्वारा कुस्तुनतुनिया पर कब्ज़ा (Capture of Constantinople by the Turks)

1453 ईसवी में तुर्कों ने पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया पर अधिकार कर लिया। इसके साथ पूर्वी रोमन साम्राज्य हमेशा के लिए समाप्त हो गया था और इसके परिणामस्वरूप, पश्चिमी यूरोप में फैली शिक्षा की लौ ने एक नए युग के आगमन में सहायता की।

मंगोलियाई साम्राज्य का उदय (Rise of the Mongolian Empire)

विशाल मंगोलियाई साम्राज्य ने पुनर्जागरण के जन्म में योगदान दिया। चंगेज़ खान की मृत्यु के बाद कुबलई खान ने एक विशाल और शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की थी। मंगोलियाई राज्य परिषद् पोप के दूत, भारत के बौद्ध भिक्षु, पेरिस, इटली और चीन के शिल्पकारों व भारत के गणितज्ञों और ज्योतिषियों द्वारा सम्मानित व गौरवान्वित था। उस काल में पर्किंग (काबुल) और समरकंद अंतर्राष्ट्रीय केंद्र बन गए थे। इसलिए पूर्व और पश्चिम निकट संपर्क में आए तथा विभिन्न देशों के लोगों के साथ संपर्क एवं विचारों के आदान-प्रदान ने यूरोपियों को अत्यधिक प्रभावित किया।

चंगेज़ खान

नवीन कला एवं साहित्य को प्रोत्साहन (Encouragement for New Art and Literature)

कई राजाओं, सरदारों और व्यापारियों ने नवीन साहित्य व कला को प्रोत्साहित किया। फ्राँस के शासक फ्राँसिस प्रथम, इंग्लैंड के राजा हेनरी अष्टम्, स्पेन के राजा चार्ल्स पंचम्, पोलैंड के राजा सिगिस्मंड प्रथम ने अनेक नवीन विचारों वाले व्यक्तियों को अपने दरबार में आमंत्रित किया और उन्हें संरक्षण दिया। फ्लोरेंस के शासक लोरोंजो-डी-मेडिसी ने कई कलाकारों को अपने दरबार में आमंत्रित किया और अपने को विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों से सुसज्जित कराया। इन शासकों के प्रगतिशील विचारों ने पुनर्जागरण को गति प्रदान की थी।

फ़्रांसिस प्रथम

पुनर्जागरण की अभिव्यक्तियाँ (Expressions of Renaissance)

मानवतावाद (Humanism)

निकोलस और थॉमस मूर

कई अर्थों में मानवतावाद न केवल एक दर्शन है, बल्कि अध्ययन का एक दृष्टिकोण भी है। मध्यकाल की शैक्षिक प्रणाली, जो लेखकों के बीच विरोधाभासों को हल करने पर केंद्रित थी, के विपरीत मानवतावादी, प्राचीन ग्रंथों का मूल रूप से अध्ययन करते थे और तर्क व अनुभवजन्य साक्ष्यों के संयोजन (Combination) के माध्यम से उनका मूल्यांकन करते थे। मानवतावादी शिक्षा पाँच मानविकी विषयों के अध्ययन पर आधारित थी: कविता, व्याकरण, इतिहास, नैतिक दर्शन और अलंकारशास्त्र।

मानवतावादी विद्वानों ने प्रारंभिक आधुनिक काल में बौद्धिक परिदृश्य को आकार दिया। निकोलस मैकियावेली और थॉमस मूर जैसे राजनीतिक दार्शनिकों ने ग्रीक और रोमन विचारकों के विचारों को पुनर्जीवित किया व उनके विचारों को समकालीन सरकार की आलोचना के संदर्भ में प्रस्तुत किया। मानवतावाद का उद्देश्य एक ऐसे सार्वभौमिक व्यक्ति का निर्माण करना था, जिसका व्यक्तित्व बौद्धिक और शारीरिक उत्कृष्टता से युक्त हो तथा जो किसी भी स्थिति में सम्मानपूर्वक कार्य करने में सक्षम हो।

कला (Arts)

लियोनार्डो द विंची

परिप्रेक्ष्य (Perspective) का विकास, कला में यथार्थवाद की ओर एक व्यापक दृष्टिकोण का हिस्सा था। चित्रकारों ने प्रकाश, छाया, प्रकाशिकी और ज्यामिति का अध्ययन करते हुए अन्य तकनीकें विकसित की थीं। उदाहरण के लिए, लियोनार्डो द विंची ने मानव शरीर का विश्लेषण किया, जिससे मानवीय हाव-भाव और अभिव्यक्त संकेतों की अभिव्यक्तियों को चित्रित किया जा सका। कलात्मक प्रणाली में इन परिवर्तनों के पीछे प्रकृति की सुंदरता को चित्रित करने और सौंदर्यशास्त्र के सिद्धांतों को प्रकट करने की एक नई इच्छा थी। लियोनार्डो, माइकल एंजेलो और रफेल के कार्यों का अन्य कलाकारों द्वारा अनुकरण किया गया था। अन्य महत्त्वपूर्ण चित्रकारों में सैंड्रो बोटिसेली (Sandro Botticalli) जो फ्लोरेंस में मेडिसी के लिए कार्य करता था, डोनोटेलो (Donatello), यह भी प्लोरेंस से संबंधित था, टिटियन (वेनिस) आदि सम्मिलित थे।

विज्ञान (Science)

क्रिस्टोफर कोलंबस

प्रारंभिक पुनर्जागरण में विज्ञान और कला का मिश्रण हुआ। वैज्ञानिक सिद्धांत पर सवाल उठाने के लिए एक उपयुक्त वातावरण विकसित हो गया था। क्रिस्टोफर कोलंबस द्वारा 1492 ईसवी में की गई नई दुनिया (अमेरिका) की खोज ने प्राचीन वैश्विक दृष्टिकोण को चुनौती दी। टॉलमी (भूगोल में) और गैलेन (चिकित्सा में) के वैज्ञानिक कार्यों ने नए वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किए।

टॉलमी और गैलेन

इस नवीन खोज की प्रक्रिया में एक और महत्त्वपूर्ण विकास वैज्ञानिक प्रणाली का था, जिसमें अरिस्टोटेलियन विज्ञान (अरस्तू के विचार) को त्यागते हुए अनुभव-आधारित साक्ष्य और गणित के महत्त्व पर ध्यान केंद्रित किया गया था। इन विचारों के प्रारंभिक और प्रभावशाली समर्थकों में कॉपरनिक्स, गैलीलियो और फ्राँसिस बेकन शामिल थे।

कॉपरनिक्स, गैलीलियो और फ्राँसिस बेकन

फ्राँसिस बेकन, जिसे आधुनिक विज्ञान के जनक के रूप में जाना जाता है, ने विचार दिया कि सत्य को प्रयोग द्वारा पहचाना जाना चाहिए। कॉपरनिकस ने अपनी पुस्तक 'ऑन द रेवोल्यूशन ऑफ़ द सेलेस्टियल बॉडी' (On the Revolution of the Celestial Body) में कहा कि "सूर्य स्थिर है; पृथ्वी और अन्य ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं।" उसका विचार उस मध्ययुगीन मान्यता के विपरीत था कि "पृथ्वी ब्रह्मांड का केंद्र है।

कॉपरनिकस के इस विचार को प्रसिद्ध जर्मन वैज्ञानिक जॉन केप्लर के सिद्धांत ने आधार प्रदान किया था। हालाँकि, उसने इस

दृष्टिकोण में परिवर्तन करते हुए कहा कि पृथ्वी और अन्य ग्रह सूर्य के चारों ओर 'वृत्ताकार पथ' के बजाय "दीर्घवृत्तीय कक्षा" में घूमते हैं। इससे चिंतन के क्षेत्र में आधारभूत परिवर्तन आए।

इस युग का एक अन्य महान वैज्ञानिक इटली का गैलीलियो था। उसने दूरबीन (Telescope) का आविष्कार किया। इस उपकरण के माध्यम से उसने सिद्ध कर दिया कि कॉपरनिकस का सिद्धांत बिल्कुल सत्य था। उसने आगे सिद्धांत दिया और सिद्ध किया कि 'आकाशगंगा' में कई तारे हैं।

जॉन केप्लर

उस युग के इंग्लैंड के एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक सर आइज़ैक न्यूटन थे। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रिंसिपिया' (Principia) में 'गुरुत्वाकर्षण के नियम' के बारे में बताया। उनके 'गति के सिद्धांत' ने उन्हें एक महान वैज्ञानिक के रूप में भी ख्याति दिलाई। 'ज्वार-भाटा के कारणों' की खोज भी उन्होंने ही की थी।

पुनर्जागरण काल में विज्ञान ने शरीर रचना विज्ञान (Anatomy) में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। चिकित्सा वैज्ञानिक वेसैलियस ने मानव शरीर के विभिन्न भागों; जैसे- कंकाल, उपास्थि, मांसपेशियों, धमनियों, पाचन तंत्र, प्रजनन प्रणाली, फेफड़े और मस्तिष्क के बारे में बताया।

विलियम हार्वे एक अंग्रेज़ी चिकित्सक और शरीर-रचना विज्ञानी था। 1628 ईसवी में उसने "रक्त परिसंचरण की प्रक्रिया" (Process of Blood Circulation) की खोज की। उसने बताया कि रक्त हृदय से धमनियों में जाता है और फिर शिराओं द्वारा है व फिर वापस हृदय में आता है। उसका योगदान नि:संदेह आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के लिए एक वरदान था।

नई वैज्ञानिक प्रणाली ने खगोल विज्ञान, भौतिकी, जीव विज्ञान और शरीर-रचना विज्ञान के क्षेत्र में महान योगदान दिया। व्यावहारिक नवाचार का विस्तार वाणिज्य के क्षेत्र में भी हुआ।

धर्म (Religion)

मानवतावाद के नए आदर्श, जो कुछ पहलुओं में अधिक पंथनिरपेक्ष थे, ईसाई पृष्ठभूमि में विकसित हुए। नई कला के बहुत-से कार्य चर्च द्वारा या उसके प्रति समर्पण के रूप में शुरू किए गए थे। हालाँकि, पुनर्जागरण का समकालीन धर्मशास्त्र पर गहरा प्रभाव पड़ा, विशेषकर जिस तरह से लोगों ने मनुष्य और ईश्वर के बीच संबंध को समझा।

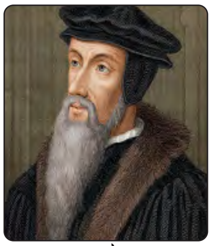
जॉन कैल्विन

उस काल के कई अग्रणी धर्मशास्त्री मानवतावादी तरीक़ों के पक्षधर थे, जिनमें मार्टिन लूथर और जॉन कैल्विन भी शामिल थे। इरास्मस और लूथर जैसे पादरियों ने चर्च में सुधार का प्रस्ताव रखा, जो सामान्यत: न्यू टेस्टामेंट की मानवतावादी पाठ्य आलोचना पर आधारित था। अक्टूबर, 1517 में लूथर ने 95 शोध-पत्र प्रकाशित किए। इन शोध-पत्रों में पोप की सत्ता को चुनौती दी गई और इस सत्ता के कथित भ्रष्टाचार की आलोचना की गई, विशेष रूप से पाप-मोचन पत्र के मामले में।

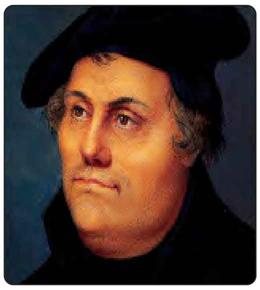
मार्टिन लूथर

95 शोध-पत्रों ने सुधार का नेतृत्व किया और रोमन कैथोलिक चर्च से संबंध तोड़ दिए, जो पहले पश्चिमी यूरोप में आधिपत्य का दावा करता था।

इसलिए मानवतावाद और पुनर्जागरण ने सुधार को बढ़ावा देने के साथ-साथ कई अन्य समकालीन धार्मिक विवादों और संघर्षों में प्रत्यक्ष भूमिका निभाई।

वास्तुकला (Architecture)

मिलान का कैथेड्रल

इटली की वास्तुकला काफ़ी हद तक पुनर्जागरण की भावना से प्रभावित थी। इस समय के भवन-निर्माताओं ने प्राचीन ग्रीस और रोमन शैली व प्रारूप का अनुसरण करते हुए कई चर्च, महल और विशाल इमारतों का निर्माण कराया था। चर्चों और महलों के नुकीले मेहराबों को गोल मेहराबों, गुंबदों या ग्रीक पूजास्थलों की सीधी रेखाओं द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था।

इटली का एक शहर 'फ्लोरेंस' कला-जगत का केंद्र बन गया था। 'सेंट पीटर्स चर्च ऑफ़ रोम', 'कैथेड्रल ऑफ़ मिलान' और 'पैलेस ऑफ़ वेनिस एंड फ्लोरेंस' पुनर्जागरण वास्तुकला के कुछ प्रमुख उदाहरण थे। समय के साथ, पुनर्जागरण वास्तुकला फ्राँस और स्पेन तक फैल गई थी।

रोम का संट पीटर्स चर्च

चित्रकला (Painting)

पुनर्जागरणकालीन चित्रकारों ने सौंदर्य संबंधी पक्षों (Asthetic aspects) की जगह यथार्थवादी चित्रण (Realistic depictions) को प्राथमिकता दी। मानव आकृति को यथासंभव यथार्थ रूप में प्राय: प्रकृति की पृष्ठभूमि के साथ चित्रित किया गया था। धार्मिक कला पर कम बल दिया गया था। विज्ञान ने कलाकारों को परिप्रेक्ष्य की अवधारणा (Concept of perspective) को समझने में सहायता की। रैखिक परिप्रेक्ष्य की सबसे अनूठी विशेषता यह है कि जैसे-जैसे पर्यवेक्षक से उसकी दूरी बढ़ती है, वस्तुएँ छोटी दिखाई देती हैं। ऐसे में छोटी चित्रित की गई वस्तुएँ वास्तव में ऐसी दिखती थीं, मानो वे बहुत दूर हों। प्रकाश के उपयोग से बनी आकृतियाँ वास्तविक लगती हैं। उस समय के प्रसिद्ध कलाकारों में निम्नलिखित लोग शामिल हैं:

- बोटिसेली (Botticelli), फ्लोरेंस (इटली) में प्रसिद्ध मेडिसी परिवार का सदस्य था। उसने वेटिकन के सिस्टिन चैपल में तीन भित्ति-चित्र/लेप-चित्र (Fresco) बनाए थे। फ्रेस्को, भित्ति चित्रकला (Mural Painting) की एक चित्रकला तकनीक है, जिसमें ताज़े प्लास्टर पर पानी में पतले खनिज-आधारित वर्णक से चित्रकला बनाई जाती है। प्लास्टर सूखने के बाद एक रासायनिक अभिक्रिया रंगद्रव्य और प्लास्टर को एक साथ बाँध देती है।
- लियोनार्डो द विंची को एक सर्वकालिक महान विचारक माना जाता है। वह एक वास्तुकार, संगीतकार, इंजीनियर, वैज्ञानिक, गणितज्ञ, वनस्पतिशास्त्री और आविष्कारक था। प्रसिद्ध 'मोना लिसा' और 'द लास्ट सपर' चित्रकलाएँ विंची की हैं।
- माइकल एंजेलो को कुछ लोग अब तक का सबसे महान कलाकार और मूर्तिकार मानते हैं। वह इतालवी पुनर्जागरण का एक महान नेता था। उसकी प्रसिद्ध कृति वेटिकन में सिस्टिन चैपल (Sistine chapel) की चित्रकला थी। छत ओल्ड टेस्टामेंट के इतिहास को दर्शाती है और इसमें 300 से अधिक तथ्य अंकित/चित्रित हैं। उसने मूर्तिकला, चित्रकला, कविता और वास्तुकला के लिए मानक निर्धारित किए थे।

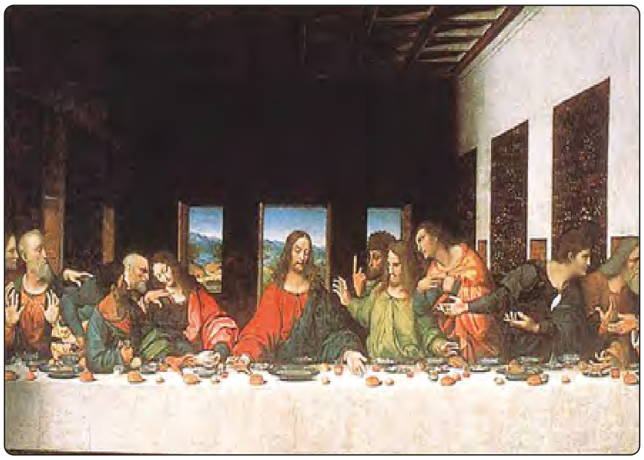

लास्ट सपर: लियोनार्डो द विंची

मोनलिसा: लियोनार्डो द विंची

मूर्तिकार के रूप में माइकल एंजेलो की प्रतिभा ने प्राचीन यूनानियों को भी टक्कर दी थी। वह एक महान चित्रकार और वास्तुकार भी था।

लास्ट जजमेंट: माइकल एंजेलो

मनुष्य का पतन: माइकल एंजेलो

राफेल, जो उपर्युक्त उल्लिखित दोनों का समकालीन था, ईसा मसीह की माँ मैडोना के चित्र के लिए प्रसिद्ध था।

मैडोना, द मदर ऑफ़ जीसस: राफेल

संगीत (Music)

संगीत-सृजन के क्षेत्र भी में विज्ञान ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। संगीतकारों को विज्ञान के ज़रिए यह जानने का अवसर मिला कि तार वाले वाद्ययंत्रों पर तार के प्रसरण एवं आकुंचन से तारत्व/स्वर (Pitch) कैसे बदलता है। संगीतकारों ने ग्रीक नाटक का अध्ययन किया और ऐसा संगीत बनाने की कोशिश की, जो उनकी कहानियों के शब्दों के अनुरूप हो। यह गीतिनाटय (Opera) का आरंभ था, जिसमें संगीत और रंगमंच का मिश्रण होता है।

इस अवधि के दौरान बाख के संगीत को भी लोकप्रियता मिली।

साहित्य (Literature)

पुनर्जागरणकालीन साहित्य का आरंभ शास्त्रीय ग्रीक और रोमन शिक्षा में नई रुचि के साथ हुआ। प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार और कैथोलिक चर्च के व्यक्तियों पर सीमित होते प्रभाव जैसे अन्य कारकों ने पुनर्जागरण लेखकों को अपनी मान्यताओं को नए तरीकों से व्यक्त करने में सक्षम बनाया। इस दौरान लेखन कला के क्षेत्र में ऐतिहासिक वृद्धि हुई। उस काल के कुछ महान लेखकों का विवरण निम्नलिखित है:

- इस दिशा में पहली प्रमुख रचना दांते की 'डिवाइन कॉमेडी' (Divine Comedy) थी। यह पुस्तक इतालवी भाषा में लिखी गई थी और जन-साधारण के लिए लिखी गई थी। इस पुस्तक में स्वर्ग, नर्क और परलोक का वर्णन किया गया है। इसमें दांते ने अपने देश के प्रति प्रेम, प्रकृति के प्रेम के साथ-साथ व्यक्ति की भूमिका जैसे नए विषयों को प्रस्तुत किया।
- मार्टिन लूथर की पुस्तक 'नाइंटी-फाइव थीसिस' (Ninety-Five Theses) ने लोगों को बहुत प्रभावित किया। लूथर ने चर्च में पादरियों द्वारा किए जाने वाले दुर्व्यवहारों के बारे में लोगों को जागरूक कर ईसाई धर्म को हमेशा के लिए बदल दिया था। उसे कभी-कभी "प्रोटेस्टेंटवाद के जनक" के रूप में भी जाना जाता है।
- निकोलस कॉपरनिकस की पुस्तक ने सिद्ध किया कि सूर्य 24 घंटे पृथ्वी के चारों ओर नहीं घूमता है। उसकी पुस्तक ने बताया कि पृथ्वी, ब्रह्मांड का केंद्र नहीं थी।
- निकोलो मैकियावेली ने अपनी पुस्तक 'द प्रिंस' में लिखा है कि राजनीति में धर्म या नैतिकता के लिए कोई जगह नहीं है। ऐसा माना जाता है कि 'सत्ता की राजनीति' का आधार इसी पुस्तक में था।
- विलियम शेक्सपियर को अब तक के सबसे महान लेखकों में से एक माना जाता है। उसने कम-से-कम 37 नाटक और 154 गीत लिखे थे।

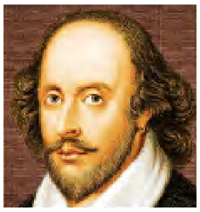

विलियम शेक्सपियर

1.5 धर्मसुधार [Reformation (16th Century)]

यह धार्मिक क्रांति 16वीं सदी में पश्चिमी चर्च में हुई थी। सुधार का आरंभ कैथोलिक चर्च के विरुद्ध एक विरोध आंदोलन के रूप में हुआ था। यह एक लोकप्रिय आंदोलन था, जो संपूर्ण चर्च व्यवस्था में बदलाव चाहता था। सुधारकों ने परिवर्तन के कुछ प्रमुख क्षेत्रों को लक्षित किया। उन्होंने पादरी वर्ग के नैतिक जीवन में सुधार लाने की कोशिश की। निःसंदेह इस आंदोलन के सबसे महान नेता मार्टिन लूथर और जॉन कैल्विन थे। दूरगामी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रभावों के साथ हुआ सुधार प्रोटेस्टेंटवाद (Protestentis) की स्थापना का आधार बन गया था। सुधार दो संदर्भों में हुआ: प्रोटेस्टेंट सुधार और कैथोलिक सुधार।

कैथोलिक चर्च की बुराइयाँ (Evils of Catholic Church)

- पोप की राजशाही/सर्वोच्चता,
- चर्च की भ्रष्ट प्रथाएँ; जैसे:- सबसे अधिक बोली लगाने वाले को "पाप-मोचन पत्र" (Letter of Indulgence) की बिक्री करना (स्वर्ग के लिए पासपोर्ट),

- केवल लैटिन भाषा का उपयोग (किसी सर्व-सामान्य भाषा का उपयोग नहीं),
- विधर्मियों और विरोधियों का उत्पीड़न,
- धर्मयुद्ध,
- मध्यकालीन यूरोप में यहूदी विरोधी भावना,
- रूढ़िवादी चर्च के साथ संबंध,
- यौन-शोषण विवाद आदि।

प्रोटेस्टेंट धर्म-सुधार (Protestant Reformation)

धर्म-सुधार आंदोलन के दौरान कैथोलिक धर्म की प्रथाओं पर सवाल उठाए गए और मार्टिन लूथर (1483-1546) जैसे महापुरुषों की मान्यताओं ने प्रोटेस्टेंटवाद नामक एक नई विचारधारा को प्रेरित किया। जब सम्राट चार्ल्स पंचम् ने कैथोलिक धर्म का प्रबल समर्थन किया और नए धर्म-सुधार आंदोलन के विरुद्ध कई कठोर निर्देश पारित किए, तब मार्टिन लूथर के समर्थकों ने इसका विरोध किया और इस विरोध व प्रतिवाद के कारण इस धर्म-सुधार आंदोलन का नाम प्रोटेस्टेंट पड़ा। इसमें कई सुधारात्मक विरोध प्रदर्शन हुए, जो रोमन कैथोलिक चर्च के आधिपत्य और भ्रष्ट प्रथाओं को दूर करना चाहते थे।

मार्टिन लूथर (Martin Luther)

1516 ईसवी में प्रोटेस्टेंट सुधार आंदोलन व्यापक स्तर पर आरंभ हुआ। 1517 ईसवी में मार्टिन लूथर ने कैथोलिक चर्च की भोग-विलास की प्रथा के विरोध में एक विद्वतापूर्ण आलोचना "95 थीसिस" लिखी। 95 थीसिस में लूथर ने इस बात को अस्वीकार किया कि चर्च के पोप के पास पापों को क्षमा करने का अधिकार है। उसने इस पुस्तक की एक प्रति विटनबर्ग में कैसल चर्च के दरवाज़े पर रख दी, जिसे बाद में जर्मन से लैटिन में अनुवादित और मुद्रित किया गया व इसे पूरे यूरोप में वितरित किया गया, जिससे प्रोटेस्टेंट सुधार हुआ।

कैथोलिक पुनरुद्धार (Catholic Counter Reformation)

- कैथोलिक प्रति-सुधार आंदोलन, जिसे कैथोलिक पुनरुद्धार भी कहा जाता है, 16वीं और 17वीं शताब्दी के आरंभ में रोमन कैथोलिक चर्च के सुधार और आंतरिक नवीनीकरण के प्रयास थे। यह आंदोलन प्रोटेस्टेंट सुधार का उत्तर था। ये सुधार लगभग उसी समय हुए, जब प्रोटेस्टेंट सुधार भी हो रहे थे।
- यह सुधार पुनर्जागरण के दौरान पोप और कई पादरियों के सांसारिक दृष्टिकोण और नीतियों की आलोचना के साथ शुरू होता है। धार्मिक पुनरुद्धार को प्रभावित करने के लिए नए धार्मिक आदेशों और अन्य समूहों की स्थापना की गई थी।
- पोप पॉल-III (पोप काल 1534-49) को प्रथम सुधारवादी पोप माना जाता है। उसने ही 1545 ईसवी में ट्रेंट काउंसिल बुलाई थी।
- इस काउंसिल ने 1563 ईसवी तक कई बैठकें कीं और समकालीन मुद्दों पर प्रबल प्रतिक्रिया प्रस्तुत की। इसकी सैद्धांतिक शिक्षा, विश्वास व ईश्वर की कृपा की भूमिका के लूथरवादी दृष्टिकोण और प्रोटेस्टेंट पंथ की धार्मिक विधियों की संख्या और प्रकृति के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी।
- अनुशासनात्मक सुधारों ने पादरियों (Clergy) के भ्रष्ट आचरण पर प्रहार किया। पादरी पद के उम्मीदवारों के प्रशिक्षण को विनियमित करने का एक प्रयास किया गया था; पादरियों के विलासितापूर्ण जीवन, चर्च कार्यालय में संबंधियों की नियुक्ति और उनके धर्म-प्रदेशों (Dioceses) से बिशपों की अनुपस्थिति के विरुद्ध उपाय किए गए थे।
- कैथोलिक सुधार मध्यकालीन चर्च के सिद्धांत और संरचना की एक पुष्टि थे। यह केवल उन सुधारों की वकालत कर रहे थे, जो इसकी प्रभावशीलता को बनाए रख सकते थे।

1.6 नई भूमि का अन्वेषण और खोज (Exploration and Discovery of New Lands)

अमेरिका

15वीं और 16वीं शताब्दी के दौरान कई यूरोपीय देशों के राजाओं ने इस उम्मीद में विदेशी अभियानों किए कि खोजकर्ताओं को अपार धन और विशाल अज्ञात भूमि मिलेगी। पुर्तगाली इस "खोज के युग" में सबसे पहले भागीदार थे। अन्य यूरोपीय राष्ट्र, विशेष रूप से स्पेन, "सुदूर पूर्व" की अनुमानित असीमित संपत्ति को साझा करने के लिए उत्सुक थे। 15वीं शताब्दी के अंत तक स्पेन का "रिकोनक्विस्टा" (सदियों के युद्ध के बाद यहूदियों और मुसलमानों को राज्य से बाहर निकालना) पूरा हो गया और उसके बाद इस राष्ट्र ने अपना ध्यान दुनिया के अन्य क्षेत्रों में अन्वेषण और विजय की ओर लगाया।

अमेरिगो वेस्पुची

15वीं शताब्दी के अंत में स्थल मार्ग से यूरोप से एशिया तक पहुँचना लगभग असंभव था। स्थल मार्ग लंबा व कठिन था और शत्रु सेनाओं के साथ मुठभेड़ से बचना भी आसान नहीं था। पुर्तगाली खोजकर्ताओं ने समुद्री मार्ग खोजकर इस समस्या का समाधान किया: वे पश्चिम अफ़्रीकी तट के साथ-साथ और केप ऑफ़ गुड होप के आस-पास दक्षिण की ओर रवाना हुए। कोलंबस और उसका दल अटलांटिक महासागर में तीन महीने गुज़ारने के बाद हिस्पनिओला द्वीप (Hispaniola Island) पर पहुँचा।

हालाँकि, कोलंबस का मानना था कि वह एशिया पहुँच गया है, लेकिन वास्तव में उसने उत्तरी अमेरिका के पूरे महाद्वीप की खोज कर ली थी।

इस प्रकार संयोगवश ही सही, कोलंबस द्वारा 'एक नई दुनिया' की खोज की गई। 1500 ईसवी में अमेरिगो वेस्पुची अटलांटिक महासागर और एशिया के मानचित्र तैयार करने में सफल रहा, जो व्यापार और नौपरिवहन दोनों उद्देश्यों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुए।

भारत

भारत के लिए समुद्री मार्ग खोजने की योजना, पुर्तगालियों द्वारा एशिया के साथ व्यापार में लागत बचत (Cost saving) के उपाय के रूप में और मसाला व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करने के प्रयास के रूप में बनाई गई थी। पुर्तगाल के नाविक प्रिंस हेनरी ने अफ़्रीकी तट की यात्राओं के आधार पर मानचित्र बनाकर नाविकों को प्रोत्साहित किया। एक व्यक्ति बार्थोलोम्यू डियाज, अफ़्रीका के दक्षिणतम बिंदु तक पहुँच गया था, जिसे पुर्तगालियों ने बाद में केप ऑफ़ गुड होप (उत्तमाशा अंतरीप) का नाम दिया था।

वास्को डी गामा

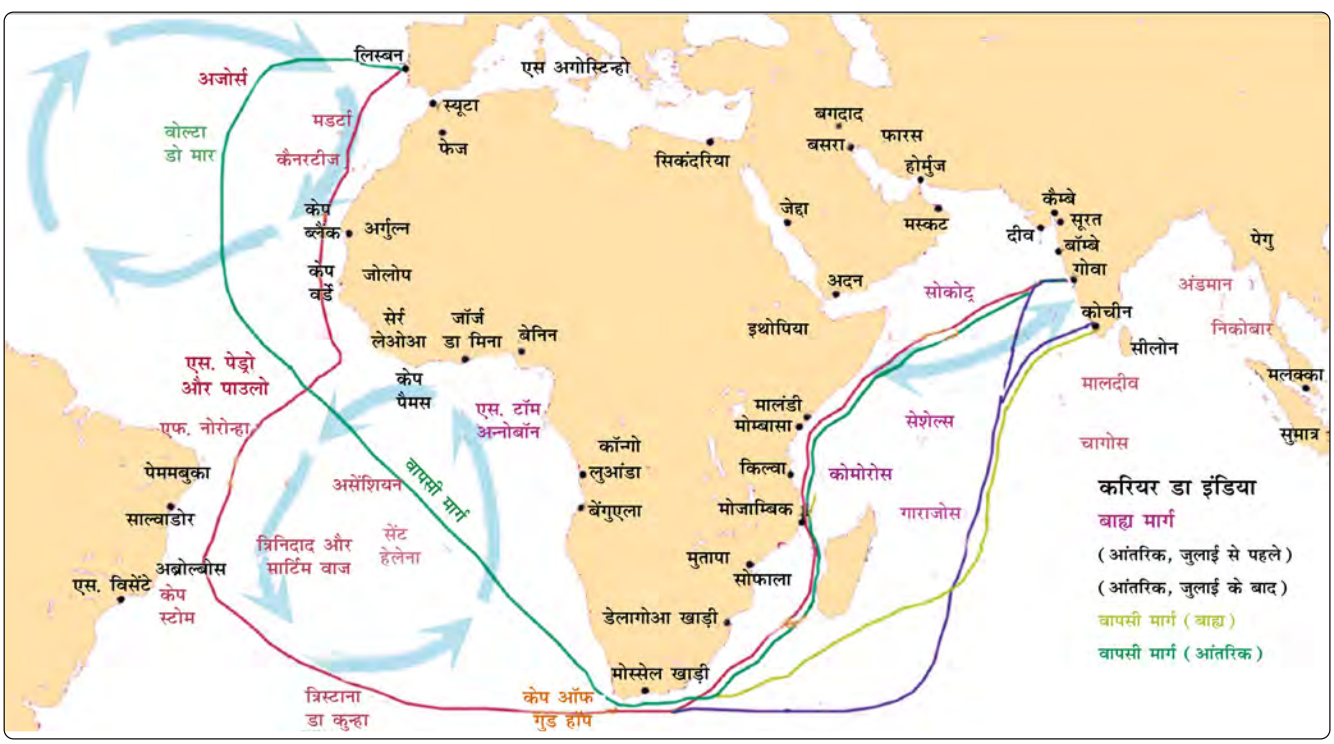

चित्र: वास्को डी गामा का यात्रा मार्ग

पुर्तगाली कुलीन वास्को द गामा (1460–1524) भारत पहुँचने और यूरोप से पूर्व तक एक समुद्री मार्ग खोजने के लिए 1497 ईसवी में लिस्बन से रवाना हुआ। अफ़्रीका के पश्चिमी तट से होते हुए केप ऑफ़ गुड होप का चक्कर लगाने के बाद वास्को द गामा मई 1498 में भारत के कालीकट तट पर पहुँचा। वास्को द गामा का पुर्तगाल में एक नायक की तरह स्वागत किया गया। उसे पुन: 1502 ईसवी में भारत में दूसरे अभियान के लिए भेजा गया और इस दौरान उसकी मुस्लिम व्यापारियों के साथ झड़प हुई। दो दशक बाद वास्को द गामा फिर से भारत आया। इस बार वह पुर्तगाली वायसराय के रूप में भारत आया था।

1.7 व्यापार और व्यापारिक नगरों का उद्भव (Emergence of Trade and Trading Towns)

हालाँकि, विद्वानों ने प्रारंभिक मध्य युग के दौरान व्यापार और शहरी जीवन पर विस्तृत चर्चा की है, किंतु इस बात पर आम सहमति है कि धर्मयुद्ध से पहले व्यापार गतिविधियों में स्पष्ट वृद्धि देखी जा सकती थी।

इस उत्तरी व्यापार प्रणाली का केंद्र फ्लैंडर्स काउंटी (निम्न देशों का एक ऐतिहासिक भू-भाग) था। 1050 ईसवी तक फ्लेमिश कारीगर (Flemish artisans) द्वारा उत्पादित गुणवत्तापूर्ण ऊनी कपड़े के उत्पादों की भारी माँग थी। फ्लेमिश कपड़े के बदले बाल्टिक फर, शहद और वन उत्पाद, ब्रिटिश टिन और कच्च ऊन का आदान-प्रदान किया गया। इटली के रास्ते दक्षिण से प्राच्य विलासिता का सामान (Oriental Luxury Goods) आता था, जिसमें प्रमुख थे- रेशम, चीनी और मसाले।

मध्ययुगीन वाणिज्यिक क्रांति का प्रमुख उत्प्रेरक (Catalyst) भूमध्य सागरीय व्यापार क्षेत्र का खुलना था। ग्यारहवीं शताब्दी में इटली ने पूर्वी भूमध्य सागर पर मुस्लिम नियंत्रण को समाप्त कर दिया और प्रथम धर्मयुद्ध के कारण निकट पूर्व के साथ व्यापार को पुनर्जीवित करने में मदद मिली। अरब जहाज पूर्व से विलासिता का सामान फ़ारस की खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों तक लाते थे। वहाँ से उन्हें कारवाँ द्वारा अलेक्जेंड्रिया, एकर और जोप्पा भेजा जाता था और उन बंदरगाहों से वेनिस, जेनोआ और पीसा के व्यापारी यूरोप के बाज़ारों के रास्ते इटली तक माल पहुँचाते थे। एशिया से अन्य व्यापारिक मार्ग बगदाद और दमिश्क से होते हुए क्रूसेडर राज्यों (मध्य-पूर्व में चार कैथोलिक क्षेत्र) में टायर और सिडोन जैसे बंदरगाहों तक पहुँचते थे। भूमध्य सागर से उत्तर की ओर सबसे आसान मार्ग मार्सिले और रोन घाटी तक था।

चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में यूरोप में दो अन्य प्रमुख व्यापार मार्ग विकसित हुए थे। एक संपूर्ण समुद्री मार्ग जिब्राल्टर जलडमरूमध्य के माध्यम से भूमध्य सागर को उत्तरी यूरोप से जोड़ता था। उत्तरी इटली से अल्पाइन दर्रों के माध्यम से मध्य यूरोप तक का पुराना भूमिगत मार्ग भी विकसित किया गया था। वेनिस और अन्य उत्तरी इतालवी शहरों से, ब्रेनर जैसे दर्रों के माध्यम से व्यापार हुआ, जिससे रोन घाटी मार्ग और शैंपेन के प्रसिद्ध मेलों के व्यापार में तेज़ी से कमी आई थी।

नगरों के उदय के कारक (Factors for the Rise of Towns)

यूरोप में व्यापार का पुनरुत्थान (Resurgence of Trade) शहरों के पुनरुद्धार (Revival of Forms) का एक प्रमुख कारण था। नगरों का उदय व्यापार के कारण हुआ। नगरों ने बड़े बाज़ार उपलब्ध कराकर और व्यापारियों को बेचने के लिए सामान तैयार करके, व्यापार को भी प्रोत्साहित किया था। इस पुनरुद्धार में भूगोल ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। नदियाँ, जो प्राचीन सभ्यताओं के विकास में महत्त्वपूर्ण थीं, मध्यकालीन शहरों के विकास में भी महत्त्वपूर्ण थीं। वे प्राकृतिक राजमार्ग की तरह कार्य करती थीं, जिनसे वाणिज्यिक का सामान आसानी से पहुँचाया जा सकता था। शहरों के विकास में योगदान देने वाला एक अन्य कारक जनसंख्या वृद्धि भी थी। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन में 1066 और 1350 ईसवी के बीच जनसंख्या तीन गुना से अधिक हो गई थी। जनसंख्या में इस तीव्र वृद्धि के कई कारण थे। विदेशी आक्रमणों की समाप्ति और कुछ क्षेत्रों में सामंती, समाज के स्थिरीकरण (Stabilization of Society) में योगदान देने वाले कारक थे। बंजर भूमि की खेती, जंगलों की सफाई और दलदली क्षेत्र में कृषि से खाद्य उत्पादन में वृद्धि हुई थी। एक अन्य कारक, जिसमें व्यापारी और शिल्प संघों ने मदद की, व्यापार और कस्बों का निर्माण करना था। यूरोप में एक नए वर्ग का उदय हुआ - एक शक्तिशाली, स्वतंत्र और आत्मविश्वासी समूह, जिसकी व्यापार में रुचि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक इतिहास में क्रांति लाने हेतु थी। इस वर्ग ने नए व्यापार और व्यापारिक नगर स्थापित करने में सहायता की।

1.8 राष्ट्र-राष्ट्रों का उदय (Rise of Nation States)

परिचय (Introduction)

13वीं सदी के यूरोप में आधुनिक यूरोप की तुलना में कम राष्ट्र थे। तब यूरोप पर हज़ारों सामंतों और राजनीतिक इकाइयों का शासन था या जिन राष्ट्रों से हम अब परिचित हैं, वे अस्तित्व में ही नहीं थे।

12वीं शताब्दी में पवित्र रोमन साम्राज्य अस्तित्व में आया। इसने एक सार्वभौमिक साम्राज्य होने का दावा किया था, हालाँकि इसमें

मुख्य रूप से जर्मनी और इटली शामिल थे और इन क्षेत्रों में भी सम्राट का नियंत्रण सीमित था। राजनीतिक विकास की प्रक्रिया, जिसका अंतिम रूप वर्तमान में "स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र राज्य" के रूप में दिखता है, पुनर्जागरण और सुधार आंदोलन के दौरान आरंभ हुई थी।

अंग्रेज़ी क्रांति (English Revolution)

अंग्रेज़ी क्रांति का उपयोग दो अलग-अलग घटनाओं का वर्णन करने के लिए किया गया है। व्हिग इतिहासकारों (इतिहास लेखन का एक दृष्टिकोण) द्वारा सबसे पहले इसे 1688 ईसवी की गौरवशाली क्रांति (Glorius Revolution of 1688) कहा गया था, जिसके तहत जेम्स द्वितीय को विलियम-III और मैरी द्वितीय द्वारा राजा के रूप में प्रतिस्थापित किया गया था और एक संवैधानिक राजतंत्र (Constitutional Monarchy) की स्थापना की गई थी। हालाँकि, बीसवीं सदी में मार्क्सवादी इतिहासकारों ने महान विद्रोह और राष्ट्रमंडल काल (1640-1660) की अवधि का वर्णन करने के लिए "अंग्रेज़ी क्रांति" शब्द की शुरुआत की थी, जिसमें संसद ने किंग चार्ल्स प्रथम के अधिकार को चुनौती दी और 1649 ईसवी में किंग चार्ल्स प्रथम की हत्या कर दी गई थी। इसके बाद 1660 में चार्ल्स के बेटे, चार्ल्स द्वितीय के रूप में राजतंत्र के पुनर्स्थापित होने से पहले रूढ़िवादी गणतंत्र सरकार "कॉमनवेल्थ" का दस वर्ष का कार्यकाल आया था।

उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि ब्रिटेन में संसद द्वारा सुधार और एकीकरण की लंबी प्रक्रिया के ज़रिए "अंग्रेज़ी क्रांति" के माध्यम एक संतुलित संवैधानिक राजतंत्र स्थापित किया जा सका था। इस दौरान क़ानून बनाए गए थे, जो स्वतंत्रता को सुनिश्चित करते थे।

■■■■

पुनर्जागरण

कारण	प्रभाव
धर्म युद्ध	मानवतावाद का विकास
व्यापार व वाणिज्य का विकास	कला में यथार्थवाद का समन्वय
प्रिंटिंग प्रेस का विकास	तर्क और तार्किकता का विकास
तुर्कों द्वारा कुस्तुनतुनिया पर अधिकार	नई वैज्ञानिक खोजें
मंगोलिया साम्राज्य का उदय	अन्वेषण और साहसिक कार्य
नए विचारों का उद्भव	धर्म सुधार आंदोलन
कला का संरक्षण	व्यापारिक नगरों का विकास

विश्व का मानचित्र (1450-1750)